भगवत् कृपा

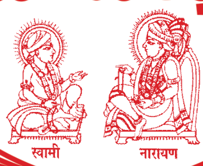

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 33 अंक : 4	17.7.2010 शनिवार (जुलाई – अगस्त)	शुल्क – प्रति अंक : 10.00 रु. वार्षिक : 50.00 रु.

भक्तों के योग व क्षेम का रक्षक यानि– 'गुरुपूर्णिमा' और 'रक्षाबंधन' का पावन पर्व 'गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्योत्सव' के संग!

युगों से मनुष्य शाश्वत शांति और सुख की खोज करता आया है। परंतु, समग्र विश्वभर में जैसे-जैसे विभिन्न संस्कृतियों या सभ्यताओं का विकास होता गया एवं वैज्ञानिक युग का प्रारंभ हुआ, वैसे-वैसे शाश्वत शांति व सुख के लिए मनुष्य की वांछा कम होने लगी। फलस्वरूप, सांसारिक सुख को ही वह सच्चा सुख मानने लगा। आख़िरकार इन भौतिक सुखों के पीछे भागते - भागते थक कर 'आत्मिक सुख' पाने के लिए आध्यात्मिकता की ओर जाने का ही एकमात्र मार्ग उसे दिखाई दिया। पर, पथदर्शक यानि – गुरु, गुरुदेव, सद्गुरु या गुरुहरि की सहायता के बिना हम इस मार्ग पर चल ही नहीं पाएंगे। इसीलिए भारत में प्रत्येक हिन्दू का यही लक्ष्य रहा है कि जीवन में एक सच्चे गुरु को धारण किया जाए। इस हेतु कोई हिमालय की बर्फीली चोटियों पर, तो कोई गिरनार की तलहटी में, कोई गंगा-यमुना के तट पर, तो कोई किसी भी तीर्थ में अथवा किसी मठ या आश्रम के द्वार पर गुरु की खोज करता है। साथ ही उसके मन में दुविधा भी बनी रहती है कि गुरु कैसे मिलेंगे। गुरु का चयन किस प्रकार करूँ कि जिसकी शरण में जाने से आत्मा धन्य हो जाए। ऐसे जटिल प्रश्न का उत्तर महर्षि श्री अरविंद के संदर्भ से **प.पू. गुरुजी** ने खूब सहज-सरल भाषा में अकसर दिया है–

पहली बार में ही जहाँ तुम्हारा दिल और दिमाग़ दोनों एक साथ झुक जाएं, तो समझना कि वे ही 'सच्चे गुरु' हैं।

दरअसल सच्चा गुरु चमत्कार दिखा कर या हमारे लौकिक संकल्प पूरे करके अपनी ओर नहीं खींचेगा, बल्कि हमारे भीतर में पहले अपने प्रति लगाव करवा कर फिर हमारे जीव को अपने संग जोड़ेगा। तत्पश्चात्, अंतःकरण का शुद्धिकरण करके, स्वभाव

से परे करके, प्रभु के चरणों में बिठा देगा। यूँ, जीव की सच्ची रक्षा तो सच्चे संत द्वारा ही संभव है। संत की परिभाषा ही यही है (स्+अंत)– **अंत तक जो साथ रहे वही संत!** वो भी, नश्वर देह के अंत तक नहीं, अपितु जीव के ब्रह्मरूप होने तक संत सदैव साथ रहते हैं। जैसे– सभी को यह एहसास है कि–

भले ही ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज ने स्थूल देह का त्याग कर दिया, परंतु आज भी वे नैपथ्य में रह कर अपने ज्योतिर्धरों द्वारा आश्रित मुक्तों की प्रगति के लिए निरंतर कार्यरत हैं और पल-पल वैसी ही परवरिश-रक्षा कर रहे हैं।

सच, हम खूब ही भाग्यशाली हैं कि ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करने का यह मौका हमें मिल गया! परंतु, जैसा कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज कहा करते थे कि *श्रीजी महाराज के समय जो परमहंस या भक्त इत्यादि थे, हम सब वे ही हैं, जो अपनी कसर पूरी करने के लिए बार-बार आते रहे हैं।*

वो कसर कौन-सी? तो, प्रगट स्वरूप को ही सर्व कर्ता-हर्ता नहीं मानने की! और तो और, अन्यों को-साथी मुक्तों को ही हमारी बाह्यदृष्टि से दोषी समझ कर, प्रगट प्रभु द्वारा हमारे ही दोष, स्वभाव और त्रुटि का दर्शन करवाने के लिए योजित प्रसंगों का मर्म न समझते हुए, इनसे परे हो जाने का मौका गँवा देते हैं।

हमारे आत्मीय स्वजन सरीखे विद्वान गुजराती लेखक **श्री दिनकरभाई जोशी** द्वारा लिखी पुस्तक ***'श्याम फिर एक बार तुम मिल जाते!'*** में श्री कृष्ण के साथ 'सत्यभामा' का निम्न प्रसंग हमें अपने भीतर में उठते हठ, मान एवं ईर्ष्या के 'स्वभाव' का दर्शन करवाते हुए एहसास कराता है कि सत्पुरुष से संबंध दृढ़ करने में हम कैसे खोट खा जाते हैं। आओ, **गुरुपूर्णिमा, रक्षाबंधन एवं गुरुहरि पप्पाजी के प्रागट्य पर्व** निमित्त इसके मर्म को समझ कर हम अपने अंतर में टटोलें और प्रगट प्रभु से हमारा संबंध दृढ़ करने में बाधारूप बनते हमारे स्वभाव-प्रकृति को छोड़ें।

श्री कृष्ण द्वारा शरीर छोड़ देने के बाद जब अर्जुन द्वारिका के महल में प्रवेश करते हैं, तब देवी रुक्मणी एवं सत्यभामा से उनकी भेंट होती है। जब वे उन दोनों को प्रणाम करते हैं तब रुक्मणी आशीर्वाद देती हैं– *यशस्वी भव!*

यह सुन कर अर्जुन कहते हैं–
यशस्वी होने के लिए अब कुछ कहाँ रह गया है? जहाँ कृष्ण न हों, वहाँ यश कैसे संभव है?

यहाँ समझ में आता है कि सच, हम अपने बल से अपने स्वभाव परिवर्तन इत्यादि के लिए कितना भी जतन क्यों न कर लें, परंतु प्रगट प्रभु की कृपा के बिना वह नामुमकिन है। वैसे हम कहते तो जरूर हैं कि प्रभु की मर्जी के बिना एक सूखा पत्ता भी नहीं हिलता। पर, क्या दिल की सच्चाई से इसे मानते हैं? अच्छा प्रसंग बने, तो हम अपनी अस्मिता को उजागर करते हुए यही कहते हैं–

'मुझे ऐसा विचार आया था और मैंने यह कदम उठाया, इसलिए ऐसा हुआ। यदि मैं न होता, तो यह काम हो नहीं पाता।'

यूँ, प्रभु और संत को भूल कर हम अपने 'अहं' के दायरे से बाहर ही नहीं आ पाते। दूसरी ओर– यदि कोई भी विषम परिस्थिति आ खड़ी हो, तो प्रभु को हितकारी न मानते हुए यह उलाहना देने से भी नहीं चूकते–

'मेरे साथ ही ऐसा क्यों किया? मैंने आपका क्या बिगाड़ा था?'

और... तब हमारे द्वारा दूसरों से की गईं ज्ञान की बातें हमें हास्य का पात्र बनाती हैं। इसीलिए **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** कहते –

सौ टन ज्ञान की अपेक्षा, थोड़ा-सा भी वर्तन अधिक है।

हमारा आचरण - हमारा व्यवहार ही तो हमारे गुरु का परिचय बनता है। सो, यह तो शिष्य पर निर्भर है कि वह अपने गुरु का परिचय कैसे बने!

अर्जुन का उत्तर सुन कर रुक्मणी रोती हुई बोलीं –

'हाँ, कृष्ण के बिना तो कोई यश संभव ही नहीं है! सिर्फ यादव कुल को ही नहीं, बल्कि समग्र आर्यावर्त्त को ही कोई पाप निगल गया है।'

पर, तब रुक्मणी के आसूँ पौंछते हुए सत्यभामा बीच में बोल उठीं –

'मैंने ही कृष्ण को दुःखी किया था। मेरे इस पाप की सज़ा सारी द्वारिका को तो न देते कृष्ण!'

यह सुन कर अर्जुन बोले –

'यह आप क्या बात कर रहीं हैं? आपने कृष्ण को दुःखी किया हो, यह तो संभव ही नहीं है।'

तब सत्यभामा से ही निम्न सारा वृतांत जानने को मिला।

एक बार नारदजी हिमालय से भ्रमण करते हुए द्वारिका आए थे। उन्होंने श्री कृष्ण को मानसरोवर से लाया हुआ भगवान शंकरजी की प्रसादी का 'ब्रह्मकमल' दिया। उसकी विशेषता यह थी कि वह कभी मुरझाएगा नहीं, हमेशा ताज़ा रहेगा। श्री कृष्ण ने वह 'ब्रह्मकमल' साथ में बैठीं रुक्मणी को देते हुए कहा –

तुम्हारे केश कलाप में यह और भी शोभा देगा।

रुक्मणी ने जैसे ही अपने केश में वह लगाया, श्री कृष्ण ने सहज ही विनोद किया –

*सच, इसे लगा कर तुम इतनी सो'णी लग रही हो, मानो कोई **'यक्षकन्या'** वनविहार के लिए तैयार हो गई हो।*

यह बात जब सत्यभामा ने जानी, तो उसके मन में रोष भर आया और बात का बतंगड़ बन गया। उसे लगता था कि भले ही राजसमाज में रुक्मणी पटरानी है, लेकिन कृष्ण का सर्वाधिक प्रेम तो उसके लिए ही है। हाँलाकि, कृष्ण तो जहाँ भी जाते, वहाँ सभी को खुश कर देते। पर, सत्यभामा तो मन में यही मानती थी कि कृष्ण सिर्फ मेरे ही हैं। सो, ईर्ष्या की ज्वाला में झुलसती उसने अपना सारा साज-सिंगार उतार कर फेंक दिया और अंदर के कक्ष में जा बैठी। भीतर ही भीतर कृष्ण को उलाहना देती रही कि कृष्ण ने मेरे साथ छल किया; उनके बाह्य प्रेम में ठगी गई वगैरह-वगैरह।

रोज की भाँति जब श्री कृष्ण सत्यभामा से मिलने आए और उसे ऐसी हालत में देखा, तो चिंतित होकर श्री कृष्ण ने पूछा कि –

आज तुम्हें क्या हो गया है? क्यों रो रही हो?

तब सत्यभामा ने कहा –

आज मेरा भ्रम टूट गया। जिंदगी में पहली बार ख्याल आया कि मैं अपने पति द्वारा ही ठगी गई हूँ। मैं तो मानती थी कि कृष्ण के सबसे निकट मैं ही हूँ।

श्री कृष्ण ने कहा – *यह बात तो सत्य है।*

तुरंत ही सत्यभामा ताना देती हुई बोली –

*यदि ऐसा होता तो ब्रह्मकमल आप **'यक्षकन्या'** जैसी रुक्मणी को न देते।*

यूँ, कहते हुए सत्यभामा ने बिच्छू के डंक की भाँति ज़हरीली और न कहने वाली बातें भी कह डालीं; जबकि सत्य तो यही था कि कृष्ण ने कभी किसी के साथ छल नहीं किया था।

कृष्ण समझ गए और उनके मुख पर दर्द की एक गहरी कालिमा छा गई। कृष्ण को ज़्यादा दु:ख इस बात का हुआ कि रुक्मणी के प्रति सत्यभामा के मन में कितनी ईर्ष्या है? इतनी-सी बात सहन नहीं हुई? उन्होंने मन ही मन सोचा कि सत्यभामा को प्रेम देने में मैंने तो कोई कसर नहीं छोड़ी, तब भी! और... मेरे साथ इतना रहने के बावजूद भी इसकी ईर्ष्या टली नहीं?

सत्यभामा कृष्ण के मौन को देखती रही। उसे लगा कि कृष्ण के अंतर का भेद खुल गया, सो वे मौन हैं। पर, इतने में कृष्ण एकदम खड़े हो गए और बोले–

तुम ऐसा कैसे मान सकती हो? कमल का एक पुष्प अंतर को इतनी गहराई तक दूषित कर सकता है, इसका मुझे यदि सपने में भी ख्याल होता, तो मैं नारदजी के इस प्रसाद को दोबारा शिवजी के चरणों में ही अर्पण कर देता।

सत्यभामा स्तब्ध हो गई, क्योंकि उसने श्री कृष्ण के चेहरे पर ऐसी व्यथा इससे पहले कभी नहीं देखी थी। सत्यभामा को एहसास हुआ कि उसने शायद बहुत बड़ी गलती कर दी है और अब उनके चरणों में गिर कर क्षमा माँग लूँ। परंतु, स्त्री सहज अभिमान के वश कृष्ण को वहीं खड़ा छोड़ कर वह अन्य कक्ष में चली गई। उसी प्रसंग को याद करते हुए सत्यभामा बोली–

ईर्ष्या के वश होकर मैंने कृष्ण को दु:खी किया था। उसी की यह सज़ा है।

सत्यभामा को अंतर्दृष्टि तो हुई कि वह गल्ती खा गई, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अपने अहम्, प्रेस्टीज़ इश्यू को छोड़ कर अगर कृष्ण के चरणों में गिर कर तब माफ़ी माँग ली होती, तो यूँ पछताना नहीं पड़ता।

सत्यभामा की ईर्ष्या की एक वृत्ति ने उसे कृष्ण से कितना अलग कर दिया! इसी प्रकार हमारे भीतर भी ऐसी वृत्तियाँ पड़ी हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमें सत्पुरुष से दूर कर देती हैं। दूसरी ओर, हमारी जड़ता हमें पछतावा भी नहीं करने देती कि सारे बेरियर्स तोड़ कर सत्पुरुष की मर्जी के मुताबिक जीएँ। और... सत्पुरुष का तो एक ही उद्यम है कि हम सब मिलजुल कर रहें-आनंद करें।

यदि हम शांत मन से सोचें, तो हमारे भीतर तो कई कितनी बार शकुनि, मंथरा, कैकयी, रावण किसी न किसी रूप में हावी हो जाते हैं। हम अपने प्रयत्न से इन पर कभी भी विजय नहीं पा सकेंगे। पर, प्रगट स्वरूप का बल लेकर तीव्र प्रार्थना, अंतर्दृष्टि करके, संत के दिखाए रास्ते पर चलते रहेंगे, तो अवश्य हमारी जीत होगी।

दरअसल **संत को हमसे नहीं, बल्कि हमारे स्वभाव से दुश्मनी है।** तो जैसे कि 'स्वामी की बात' में लिखा है **इयळ (कीड़ा) भ्रमरी का दंश सहन करती है, तभी स्वयं भ्रमरी बनती है।**

तो, जब जीतेजी प्रभु की मूर्ति के सुख से सुखी करने के लिए संत हमें कसनी में लेते हैं, तब हम क्यों अपनी तुच्छ और क्षुद्र वृत्तियों के वश प्रगट प्रभु का संबंध खो देते हैं? बस, प्रसंग पर दिल की सच्चाई से उन्हें ही कर्ताहर्ता, नियंता, प्रेरक व हितकारी मान कर जीने लगें और जाने-अनजाने किसी वृत्ति के आवेग में हमसे ऐसी भूल सत्पुरुष के साथ न हो, इसके लिए हमेशा खूब जाग्रत रहें–ऐसी सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में गद्गद् कंठ से प्रार्थना...

✡✡✡

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वाँ प्राकट्योत्सव
'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव' के रूप में मनाएंगे;
जब **'एकता ही एकांतिकभाव'** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का
एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।
सो, हम 'गुरुभक्ति' अदा करने का यह मौका न चूकें...
प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी / अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें,
जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ
'યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ' રૂપે ઊજવીશું;
જ્યારે **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો
એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.
આપણે 'ગુરૂભક્તિ' અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...
પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ
એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

'योगी परिवार का अद्भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

सौरभ - १५

સ્વામિશ્રીજી

હે ગુરુહરિ પપ્પાજી! આપ જ પ્રેરણા કરી લખાવો ને એ માહાત્મ્ય-પ્રાર્થના મારું જીવન બની રહે એ જ આપના પુનિત ચરણકમળમાં પ્રાર્થના...

હે કાકાશ્રી!

આપે ભયંકર ઝંઝાવાતને પણ તૃણવત ગણી ***'યોગીજી મહારાજ અક્ષરપુરુષોત્તમનું પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપ છે'***ના ઉદ્‌ઘોષે સહુની સ્વરૂપનિષ્ઠા દૃઢ કરાવી **શૂરવીરતા**ના દર્શન કરાવ્યા...

પંચવર્તમાનેયુક્ત ગુણાતીત સાધુ તૈયાર કરવાની બાપાની આજ્ઞામાં માન-અપમાન અવગણી **અદ્‌ભુત ગુરૂભક્તિ**ના દર્શન કરાવ્યા...

તન-મન-ધનની પરીક્ષામાં 'સ્વામિનારાયણ' મંત્રની અહાલેક જગાવી ભક્તોને ભજનિક બનાવી **ગુણાતીત ગરિમા**ના દર્શન કરાવ્યા...

ગમે તેવા વિપરીત સંજોગોમાં '*મારા બાપનું-જોગીનું રાજ ચાલે છે...*' કહી હામ આપી સહુને ખમીરવંતા કરી **સુહૃદ્‌ભાવ**ના દર્શન કરાવ્યા...

હે કાકાશ્રી!

આપ છો નિર્દોષબુદ્ધિના સમ્રાટ!
આપે જોયો કેવળ મહારાજનો સંબંધ
આપ જોગી અર્થે જ જીવ્યા પ્રત્યેક પળ...
આપના શતાબ્દીપર્વે
આપના શ્રીચરણે
શત શત સાષ્ટાંગ પ્રણામ...
પ્રાર્થીએ દઈ દયો નિર્દોષબુદ્ધિના દાન...
મરણિયા થઈ જીતી જઈએ ગુણાતીત જંગ...

***

સ્વામિશ્રીજી

હે ગુરુજી!

આપ છો યોગીજી મહારાજ, કાકાજી-પપ્પાજી ને સોનાબાનું અદ્‌ભુત અનુપમ સર્જન!!

દિલ્હીમાં મંદિરની સ્થાપના અને અક્ષર-પુરૂષોત્તમની મૂર્તિઓની પ્રાણપ્રતિષ્ઠાના યોગીજી મહારાજના સંકલ્પને કાકાશ્રીએ ઝીલ્યો ને એ કાર્યની પસંદગી કાજે આપના પર સુવર્ણકળશ ઢોળ્યો.

એ કાર્યમાં અકલ્પ્ય ભીડો વેઠી આપે પ્રભુબળે રેતીમાં વ્હાણ ચલાવ્યા...

ભક્તોની કક્ષાએ વર્તી આત્મીયતા... સર્વદેશીયતાના પૂર વહાવ્યા...

સહુના આધ્યાત્મિક ને વ્યવહારિક કાર્યમાં હૂંફ ને હિંમત બક્ષ્યા...
અખંડ ધૂન-ભજન કરી-કરાવી સહુને એકાંતિક ધર્મના માર્ગે ચાલતા કર્યા...
અદ્‌ભુત માહાત્મ્ય સીંચી ભક્તોને ભીડાભક્તિમાં માલ માનતા કર્યા...

કારણ...

સદાય આપના અંતરે ઉછળે
કાકાશ્રી પ્રત્યેની અનોખી ભક્તિ ને દાસત્વ !
સદાય આપના વિચારે મ્હેકે
કાકાશ્રી સંગેનું આંતરિક અસ્ખલિત અનુસંધાન !
સદાય આપના વર્તને છલકે
કાકાશ્રીના અંતર્ગત રૂચિ, રહસ્ય ને અભિપ્રાય !
હે ગુરૂજી ! પ્રાર્થના છે આપના અમૃતપર્વે...
અમ સહુની પ્રત્યેક પળ પ્રભુમય બનો... અમૃતમય બનો
અમ સહુના પ્રત્યેક ધબકારે પ્રભુતા વહો... દિવ્યતા વહો...

– પૂ. પદુબેન, ગુણાતીત જ્યોત – વલ્લભ વિધાનગર

[हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी

हे गुरुहरि पप्पाजी ! आप ही प्रेरणा करके लिखवाना और यह माहात्म्य-प्रार्थना मेरा जीवन बना रहे यही आपके पुनीत चरणकमलों में प्रार्थना...

हे काकाजी !

आपने भयंकर तूफानों को भी तिनके की भाँति गिन कर ***'योगीजी महाराज अक्षरपुरूषोत्तम का प्रत्यक्ष स्वरुप हैं'*** के उद्‌घोष से सभी की स्वरूपनिष्ठा दृढ़ करवा कर **शूरवीरता** का दर्शन करवाया...

पंचवर्तमान से युक्त गुणातीत साधु तैयार करने की बापा की आज्ञा में मान-अपमान को न गिन कर **अद्‌भुत गुरुभक्ति** का दर्शन करवाया...

तन-मन-धन की परीक्षा में 'स्वामिनारायण' मंत्र की अलख जगा कर भक्तों को भजनीक बना कर **गुणातीत गरिमा** का दर्शन करवाया...

कैसे भी प्रतिकूल संजोगों में *'मेरे बाप का-जोगी का राज चलता है...'* यूँ हिम्मत देकर सभी में जोश भरते हुए **सुहृद्‌भाव** का दर्शन करवाया...

हे काकाजी !

आप हो निर्दोषबुद्धि के सम्राट !

आपने देखा केवल महाराज का ही संबंध
आप प्रत्येक पल योगी के लिए ही जिए...
आपके शताब्दी पर्व पर
आपके श्रीचरणों में
शत् शत् साष्टांग प्रणाम...
प्रार्थना करते हैं कि दे दो निर्दोषबुद्धि का दान...
मरजीवा होकर जीत जाएं गुणातीत जंग...

***

स्वामिश्रीजी

हे गुरुजी!

आप हो योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी और सोनाबा का अद्‌भुत अनुपम सर्जन!!

दिल्ली में मंदिर की स्थापना और अक्षर-पुरुषोत्तम की मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा के योगीजी महाराज के संकल्प को काकाजी ने झेला और इस कार्य को संपन्न करवाने की पसंदगी का स्वर्णकलश आप पर उड़ेल दिया।

इस कार्य को करने के लिए अकल्पनीय कसनी सह करके प्रभु के बल से आपने रेत में ज़हाज़ चलाया...

भक्तों की कक्षा पर वर्त कर आत्मीयता का... सर्वदेशीयता का पूर बहाया...

सभी को आध्यात्मिक और व्यावहारिक कार्य में हौंसला और हिम्मत बख़्शी...

अखंड धुन-भजन कर–करवा कर सभी को एकांतिक धर्म के मार्ग पर अग्रसर किया...

भक्तों में अद्‌भुत माहात्म्य सींच कर उन्हें कसनी की भक्ति करा करने का बल प्रदान किया...

क्योंकि

आपके अंतर में सदैव उछलती है
काकाजी के प्रति की अनोखी भक्ति और दासत्व!
आपकी सोच में महकता है
काकाजी के साथ का निरंतर आंतरिक अनुसंधान!
आपके बर्ताव में झलकते हैं
काकाजी के हृद्‌यगत रुचि, रहस्य और अभिप्राय!
हे गुरुजी! प्रार्थना है आपके अमृतपर्व पर...
हम सभी के जीवन का प्रत्येक पल प्रभुमय बने... अमृतमय बने...
हम सभी की प्रत्येक धड़कन में प्रभुता बहे... दिव्यता बहे...

– पू. पद्‌ु बहन, गुणातीत ज्योत-वल्लभ विद्यानगर

જય સ્વામિનારાયણ

सौरभ - १६

મહારાજે જેમ સોરઠના હરિભક્તોને ગુણાતીતાનંદસ્વામિજીની 'બક્ષિસ' આપેલી, તેમ પ.પૂ. ગુરૂજી એટલે ઉત્તરભારતના મુક્તોને પ.પૂ. કાકાજીએ આપેલી 'બક્ષિસ' !

પ.પૂ. ગુરૂજી વિષે કંઈ પણ લખવા માટે અમે અસમર્થ છીએ. છતાં ય પ.પૂ. દીદીની આજ્ઞાએ હાં હાં ગડથલરૂપે અમારાં અનુભવો લખીએ એ ભક્તિ છે. આપણે બ્રહ્મપ્રવાહમાં પ.પૂ. કાકાજીના લખેલા પત્રો વાંચીએ તો ખબર પડે કે **પ.પૂ. કાકાજીની અભિપ્રાયની ભક્તિ સિવાય ગુરૂજીએ પોતાની રીતનો કોઈ ઉધમ જ કર્યો નથી. નહીં તો, અતિશય બુદ્ધિશાળી, અતિશય ચતુર ને ભગવાન એવા રાખ્યા છે કે એમની પાછળ ટોળાંના ટોળાં ગાંડા થઈને ફરે.**

* મંદિરમાં એકવાર સભામાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ વચનામૃત મ-૧૩ સમજાવ્યું. પછી બધાંને કહ્યું કે આખી રાત જાગીને આ વચનામૃત વાંચજો. મેં રાતે જાગીને વાંચ્યું ને પરોઢીએ ભજન કરવા બેઠી, તો ધ્યાન ધરતાં પ.પૂ. ગુરૂજીની મૂર્તિ જાણે મોટી થતી જાય. તેમાં નદી-નાળા, મકાનો બધું વિલીન થતું જાય. પછી શહેરો, પૃથ્વી અને પછી બ્રહ્માંડો ક્રમશઃ વિલીન થતા જાય અને સાથે-સાથે મૂર્તિ વિરાટ થતી જાય અને તેજ-તેજ દેખાય. પ.પૂ. જ્યોતિબેને એકવાર અમને કહ્યું હતું કે ગુરૂજી ભવ્યાતિભવ્ય કાર્ય કરે છે.

* મારો દિકરો પિન્ટુ ૩-૪ વર્ષનો હશે ત્યારે એને ફેઈસ ઉપર સફેદ ડાઘ નીકળી આવ્યા. બે – ગાલ ઉપર અને કપાળ ઉપર. દિલ્હીના સારામાં સારા ડૉ. કંધારીની દવા શરૂ કરી. ૫-૬ મહિના દવા ચાલી, પણ કંઈ અસર નહીં. એક દિવસ જાની સાહેબે પ.પૂ. ગુરૂજીને વાત કરી. પ.પૂ. ગુરૂજીએ પિન્ટુને નજીક બોલાવી માથે હાથ મૂકી થોડી વાર સુધી ડાઘને જોયા કર્યા, જાણે દ્રષ્ટિ કરી દીધી. પછી કહે કે દવા તો ચાલુ જ રાખજો, પણ ઠીક થયા પછી 'બ્રહ્મજ્યોતિ' જઈ પ.પૂ. કાકાજીની સમાધિની ૧૦૦૦ પ્રદક્ષિણા કરી આવજો. દવા એની એ જ ચાલુ રાખી હતી. જે દવાએ ૬ મહિનાથી ફરક ન્હોતો પડતો, એ જ દવાથી એક જ મહિનામાં ફરક પડવા મંડ્યો અને ૩ મહિનામાં તો ડાઘ મટી પણ ગયા. **સંત એ ભગવાનનું સ્વરૂપ જ છે, પણ પ.પૂ. ગુરૂજી ઘણીવાર કહે છે કે *સંત ભગવાન સાથે હંમેશા 'સ્વામીસેવકભાવ' રાખે છે. આપણાં પ્રારબ્ધ એ વૅવ ઑફ નથી કરતા, પણ પોતા ઉપર લે છે.* તે પ્રમાણે પ.પૂ. ગુરૂજીના પગમાં પછી નાનો એવો સફેદ દાગ નીકળી આવ્યો.** આમ પોતાના ઉપર લઈને તેમણે ટાળ્યું **એવા– 'ભક્તવત્સલ'**.

* હું પહેલેથી જ જરાય આસ્તિક નહીં. પૂજા-પાઠ વગેરે કરવું ગમે નહીં. એકવાર મેં પ.પૂ. ગુરૂજીને કહેવડાવ્યું કે બધાં પોતાની પર્સનલ પૂજા રાખે છે, પણ મને તો એવું ફાવે નહીં. તો એમણે કહેવડાવ્યું કે *તમારે એક નિયમ રાખવો – કંઈ પણ મોઢામાં નાંખતા પહેલા ભગવાનની મૂર્તિ સંભારીને જ જમવું. પાણી પણ પીવું હોય તો મૂર્તિ સંભારીને.* ઘણાં વર્ષો સુધી આ ચાલ્યું. પણ

એકવાર કઈંક મન ફટકેલું, તે યાદ તો હોય કે મૂર્તિ સંભારવાની છે પણ 'નથી સંભારવી' – કરીને ખાઈ લેવા માંડયું.

પાણીપતવાળા પૂ. અંજલિભાભી મંદિરે આવ્યા હોય ત્યારે પહેલાં પોતાની થાળી સેવક દ્વારા પ.પૂ. ગુરૂજીને મોકલતાં. તો એક દિવસ અંતર્યામીપણે એ સેવક થકી બતાવી પ.પૂ.ગુરૂજીએ મને કહેવડાવ્યું કે *આ અંજલિ, પહેલાં મને મોકલીને જમે અને તમે તો બસ નાખો છો ડોઝામાં.* તો ય આપણે સુધર્યા નહીં. કંઈક વધારે જ ફટકેલું હતું કે નથી કરવું, જાવ. પછી એક વાર શ્રીમતી સોનિયા ગાંધીજીને મળવા જવાનું હતું. ત્યાં ૩-૪ કલાક થઈ ગયા, એટલે અમે સાંજે ૭ વાગે મંદિરે પાછા ફરતાં હતા. બધાં કહે કે પહેલા ચ્હા-કૉફી પીવા પડશે. મંદિરમાં જેવા એન્ટર થયાં, તેવાં ગુરૂજીએ સેવકને કીધું– *આ બધાંને પહેલાં ચ્હા-કૉફી પીવડાવો* . જેવી મારી કૉફી આવી કે આપણે તો પીવાની શરૂ કરી. તો, ગુરૂજીએ તરત કહેવડાવ્યું કે *આ શોભના આખા ગામને સમજાવે કે આપણે પહેલાં ભગવાનને ધરાવીને જમવું અને પોતે સીધું નાખે પોતાના ડોઝામાં.* આમ ટકોરીને ય જીવને મૂર્તિમાં રાખવાનો કેવો ઉદ્યમ! અને આપણે કેવા કે ગમે તેટલા અનુભવો પછી પણ જીવદશામાં જ રહીએ!!

* પરછાઈ અને ગાર્ગી ખૂબ નાના હતા, ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહેવડાવ્યું હતું કે *અમારી બે ગાડીઓ તમારા પાર્કિંગમાં પાર્ક છે. અમે લેવા આવીશું ત્યારે ડૅમરેજ ચાર્જ આપીશું.*

  તો મને એમ કે અત્યારે ઘરમાં એક ગાડી છે, આગળ જઈને કદાચ પ.પૂ. ગુરૂજીને મંદિરની સેવામાં બે ગાડીઓ ભેટમાં આપવાની થશે. પણ પરછાઈ જે દિવસે ભગવાન ભજવા માટે ગઈ, તે દિવસે પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને માળા મોકલાવી અને કહેવડાવ્યું કે *આ અમારી એક ગાડીનો ડૅમરેજ ચાર્જ.* ત્યારે મને ખ્યાલ આવ્યો કે તો હવે બીજી ગાડી રહી. પણ ગાર્ગીના તો કોઈ એવા ગુણો દેખાય નહીં કે ભગવાન ભજે. ખૂબ જ ચંચળ, સ્વતંત્ર ને મોડર્ન; પણ પ્રેમાળ ખૂબ. તેને પ.પૂ. ગુરૂજી, પ.પૂ. દીદી અને બ્હેનો સાથે પહેલેથી જ હેત. રજા પડે, તો બ્હેનો પાસે રહેવા જાય. મને પ્રશ્ન થાય કે આ ભગવાન ભજશે ખરી? એવામાં મારા સસરા જાની સાહેબ ધામમાં ગયા અને **પ.પૂ. પપ્પાજી**નો સ્વહસ્તે લખેલો આશિષ પત્ર આવ્યો. તેમાં તેમણે લખેલું કે ***તમારી બેઉ દીકરીઓ ભગવાન ભજે છે, તો તમે તો ખૂબ સુખિયા થઈ ગયા.*** ત્યારે ગાર્ગીનું કંઈ નક્કી ન્હોતું. પણ, મારૂં નક્કી થઈ ગયું કે પ.પૂ. ગુરૂજીએ તો કહ્યું જ છે અને પ.પૂ. પપ્પાજીએ પણ સિક્કો મારી દીધો, તેથી આનું ય ભગવાન ભજવાનું તો પાકું જ. ખરેખર, **પ.પૂ. દીદીએ ભગવાન ભજવાની પહેલ કરી ઉત્તર ભારતની બ્હેનો માટે રસ્તો ખોલી આપ્યો. પોતે કાંટાળા રસ્તે ચાલી, અત્યારની બ્હેનો માટે જાજમ બિછાવી, સુગમ કરી આપ્યું.**

* પરછાઈ ભગવાન ભજવા માટે ઘરેથી વિદાય થઈ. તે વખતે તો ખુશી-ખુશી વિદાય કરી, પણ બીજે દિવસે સવારથી મારો મોહ મને હેરાન કરે કે ત્યાં ખાશે શું? કેમ રહેશે? વિગેરે. સાથે-સાથે રડવાનું સતત ચાલુ. આંખમાંથી આંસુ તો રોકાય નહીં. જો કે મારી જ ઇચ્છા હતી કે બન્ને

દીકરીઓ ભગવાન ભજે. આમ ૧૫-૨૦ દિવસ ચાલ્યું. મંદિરમાં જાઉં કે ઘરે હોઉં, તો રડતી જ રહું. પછી પ.પૂ. ગુરૂજીને પ્રાર્થના લખી કે મારા મોહને ટાળવા તમે જ સમર્થ છો, તમે જ મને આમાંથી કાઢો... સાથોસાથ મેં પ.પૂ. દીદીને ય પ્રાર્થના કરી કે તમે મારા માટે ભજન કરો. તો દીદી બોલ્યા કે *હું ય આજે તમારે માટે પ.પૂ. કાકાજીની સમાધિ ઉપર પ્રદક્ષિણા કરીશ* અને... બીજે દિવસે સવારથી હૈયામાં શાંતિ થઈ ગઈ.

* અમે એકવાર **પ.પૂ. ગુરૂજી**ને પુછાવડાવ્યું કે આપ **અતિશય બુદ્ધિશાળી, અતિશય પ્રેમાળ, અતિશય ભજનિક, જાગ્રત, ગજબની કાર્યશૈલી** અને અમે બધાં સાવ આવા જ; તે તમને ક્યારે ય પ.પૂ. કાકાજીને પ્રશ્ન નથી થતો કે મને આવા સમાજમાં ક્યાં મૂક્યો ? તો કહેવડાવ્યું કે *ના, હું દિલની સચ્ચાઈથી માનું છું કે મારી બુદ્ધિની તીક્ષણતાને ઓછી કરવા માટે જ તમને બધાંને રાખ્યા છે.* સાચે જ, **હર પ્રસંગે નવી-નવી રીતે, વિધ-વિધ રીતે અમારી સાથે વર્તીને પોતે બદલાઈને પણ અમારા સહુનું જતન જ કર્યું છે.** કઈં કેટલાય પ્રસંગે દિવ્યરૂપે સાથે જ રહ્યા છે. બાકી **માન આપીને કે માનભંગ કરીને, ખૂબ લાડ લડાવીને કે લાપરવાહી બતાવીને, નારાજગી ગ્રહણ કરીને કે રાજીપો બતાવીને હંમેશાં જીવને પક્ષે જ રહ્યા છે. દરેકને આગળ લઇ ગયા છે.**

* **નાનામાં નાની વાત હોય, ચાહે વ્યાવહારિક હોય કે આધ્યાત્મિક પણ પ.પૂ. ગુરૂજી પ.પૂ. કાકાજીને આગળ રાખે જ.** હંમેશાં કહે કે *આ અમને પ.પૂ. કાકાજીએ શીખવાડયું અને આપણે આપણી તુચ્છ જેવી બુદ્ધિનું પ્રદર્શન કરવા જ આતુર હોઈએ! પોતાની ગણના કરાવવા માટે જ સૂક્ષ્મરૂપે પણ લાલાયિત રહીએ.*

મારૂં અંગ મહિમા ગાવાનું. મને કોઈની પાસે પ.પૂ. ગુરૂજીની કે સત્સંગની મહિમા ગાવાની ટેવ. પરછાઈની કિડની ફેઇલ થઈ ગઈ, ત્યારે અમદાવાદથી મારી કઝિન ડૉ. વર્ષા ત્રિવેદીને અહીં બોલાવ્યા હતાં. પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને કહેવડાવ્યું કે *એને સત્સંગની વાતો કરજો.* મેં ગુરૂજીને કહેવડાવ્યું કે હું અત્યારે એમને શું સત્સંગની વાતો કરૂં ? મારૂં જ મન પરછાઈને લઇને ડહોળાયેલું છે. તો બોલ્યા– *એમાં શું ? બહુ તો ધામમાં જશે.* મેં કહ્યું ધામમાં જાય તેનો વાંધો નથી. ફરીને અહીં જ આવવાની છે. પણ જે યાતનામાંથી એને ગુજરવું પડશે, તે વિચારે ઉદાસ થઈ જવાય છે. તો, એમણે એક સાખી ગાઈ– *આગળ સુખ છે અતિ ઘણું...* પછી ફરી કહેવડાવ્યું કે *ડૉ. વર્ષાને સત્સંગની વાતો કરજો.* તેને દિલ્હી ફરવા લઈ જતાં ગાડીમાં મેં ૩-૪ કલાક જે સત્સંગની વાતો કરી કે હું પોતે બળમાં આવી ગઈ. આમ, આટલાં વર્ષે પ્રતીતિ કરાવી કે અત્યાર સુધી બીજાંને સત્સંગની વાતો કરાવી એમણે તો મારૂં જ પાકું કરાવ્યું છે. ત્યાં સુધી તો મારા મનમાં ગેરસમજૂતી હતી કે હું મહિમાની વાતો સારી કરી શકું છું.

ગુરૂજીને હરિભક્તો સાથે એટલો આપોપોભાવ, એટલો મહિમા કે ભક્તો આગળ એમણે કોઈ વસ્તુની ગણતરી રાખી નથી. તેથી સંતો, સેવકો કે બ્હેનો પણ એટલાં જ સુહૃદ્‌ભાવથી વર્તે, જેથી ભક્તોને પણ ક્યારે ય જુદારો નથી લાગ્યો.

* પરછાઈની બન્ને કિડની ફેઈલ થઈ, ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજી કહે કે આ મહારાજ તરફથી આવેલું છે, તેની સેવામાં લાગી પડો. તેમાં સહુ બ્હેનો પણ એવા સેવામાં લાગ્યા'તા કે પ્રાઇમ મિનિસ્ટરની છોકરીને પણ આવી હુંફ, આવો પ્રેમ, લાગણી કે સગવડ ન મળે. એમાં **પૂ. સ્વાતિદીદી**એ તો સતત એની સાથે રહીને માની જેમ તેને સાચવી છે. હકીકતમાં હું પણ તેનું આટલું ન સાચવી શકત. તેમણે એની નાની-નાની બાબતોનું ખૂબ ધ્યાન રાખ્યું છે. પરછાઈને ડાયાલીસીસ માટે લઈ જાય, તો ખાસ મોટી ગાડી લે અને સીટ પર રજાઈ પાથરી ને તેમાં સુવાડીને લઈ જાય કે તેને આંચકા ન લાગે. પૂ. દીક્ષાદીદી, પૂ. નિત્યા, પૂ. ગંગાએ પણ અમદાવાદમાં તેની સેવામાં કોઈ કસર રાખી ન્હોતી. અમદાવાદના હરિભક્તોએ તો પ.પૂ. ગુરૂજીને કહ્યું હતું કે અહીં તો જાણે 'કિડની ઉત્સવ' થયો. ભક્તો રોજ ટીફીનમાં વિવિધ વાનગીઓ મોકલતાં.

તો, હે પ્રભુ! આવા સમાજમાં રહેવાનો મોકો મળ્યો છે, તો સ્વભાવરૂપી નાની-નાની કણીઓ ઓગાળી, અખંડ આનંદમાં અને અહોહોભાવમાં જ રહેવાય; **કૃતઘ્ની ના થઈએ** એ જ પ્રાર્થના.

– શોભના જાની, દિલ્હી

[हिन्दी अनुवाद]

जय स्वामिनारायण!

महाराज ने जैसे सोरठ के हरिभक्तों को गुणातीतानंदस्वामिजी 'बख़्शिश' दिए, वैसे प.पू. गुरुजी यानि उत्तरभारत के मुक्तों को प.पू. काकाजी द्वारा मिली 'बख़्शिश'!

प.पू. गुरुजी के बारे में हम कुछ भी लिखने के लिए सर्वथा असमर्थ हैं। फिर भी प.पू. दीदी की आज्ञा से प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने की भावना से अपने अनुभव लिखे हैं। **'ब्रह्मप्रवाह'** में प.पू. काकाजी द्वारा लिखे पत्र पढ़ते हैं तो ख्याल पड़ता है कि प.पू. काकाजी की अभिप्राय की भक्ति के सिवा गुरुजी ने अपनी कोई रीति या कोई निजी उद्यम ही नहीं रखा है। वर्ना तो, अतिशय बुद्धिशाली, अतिशय चतुर गुरुजी ने भगवान ऐसे रखे हैं कि उनके पीछे टोले के टोले अपनी सुध-बुध भूल कर घूमें।

* मंदिर में एक बार सभा में प.पू. गुरुजी ने वचनामृत म-१३ समझाया। फिर बोले कि सारी रात जाग कर यह वचनामृत पढ़ना। मैंने रात को जाग कर वह पढ़ा और आलथी-पालथी मार कर भजन करने बैठी तो ध्यान करते ही ऐसा लगा कि प.पू. गुरुजी की मूर्ति मानो अत्यंत बड़ी होती जा रही है। उसमें नदी-नाले, मकान सब विलीन होते जा रहे हैं। फिर उसमें शहर, पृथ्वी और ब्रह्मांड भी विलीन होते महसूस किए। साथ ही साथ मूर्ति विराट होती गई और तेज ही तेज दिखाई देने लगा। प.पू. ज्योति बहन ने एक बार हमसे कहा था कि गुरुजी भव्यातिभव्य कार्य करते हैं।

* मेरा बेटा पिन्टु ३-४ वर्ष का होगा, तब उसके चेहरे पर, दोनों गाल और माथे के ऊपर सफ़ेद दाग निकल आए थे। दिल्ली के माने हुए डॉक्टर कंधारी की दवाई शुरू की। पाँच-छः महीने दवाई जारी रही, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। एक दिन जानी साहेब ने प.पू. गुरुजी से बात की। प.पू. गुरुजी ने पिन्टु को नज़दीक बुला कर, माथे पर हाथ रख कर, थोड़ी देर तक दाग़ को देखा–मानो दृष्टि कर दी। फिर बोले

कि दवाई तो जारी ही रखो, लेकिन ठीक होने के बाद 'ब्रह्मज्योति' जाकर प.पू. काकाजी की समाधि की एक हज़ार प्रदक्षिणा कर आना। दवाई देनी जारी ही रखी। जिस दवाई से छः महीने से फर्क नहीं पड़ता था, उसी दवाई से एक ही महीने में फर्क पड़ने लगा और तीन महीने में तो दाग़ मिट भी गए। संत तो भगवान का स्वरूप ही हैं, लेकिन प.पू. गुरुजी कई बार कहते हैं कि ***संत भगवान के प्रति हमेशा 'स्वामीसेवकभाव' रखते हैं। हमारे प्रारब्ध वे वॅव ऑफ नहीं करते, लेकिन अपने ऊपर ले लेते हैं।*** **इसके मुताबिक बाद में प.पू. गुरुजी के पैर पर वैसा ही सफ़ेद दाग़ निकल आया।** यूँ अपने पर लेकर उन्होंने टाल दिया **ऐसे – 'भक्तवत्सल'।**

* मैं पहले से ही तनिक भी आस्तिक नहीं। पूजा-पाठ इत्यादि करना मुझे पसंद नहीं था। एक बार मैंने प.पू. गुरुजी से कहलवाया कि सभी पर्सनल पूजा करते हैं, लेकिन मुझे तो ऐसा करना जमता नहीं। तो उन्होंने कहलवाया कि *तुम एक नियम रखना – मुँह में कुछ भी डालने से पहले भगवान की मूर्ति को याद कर लेना। पानी भी पीना हो तो मूर्ति याद करके।* कई वर्षों तक ऐसा चलता रहा। लेकिन एक बार कुछ दिमाग़ बिगड़ा, याद तो था कि मूर्ति को याद करना है लेकिन 'नहीं याद करना' – ऐसा सोच कर कुछ खा लेती।

  पानीपत वाली पू. अंजलिभाभी जब भी मंदिर आतीं, तो भोजन की थाली पहले सेवक द्वारा प.पू. गुरुजी को भेजती थीं। एक दिन अंतर्यामी रूप से सेवक द्वारा दिखला कर प.पू. गुरुजी ने मुझे कहलवाया कि *यह अंजलि, पहले मुझे भिजवा कर फिर खाती है और तुम तो बस पेट में डाल देते हो।* तब भी मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। कुछ ज़्यादा ही दिमाग़ बिगड़ा हुआ था कि नहीं ही करना, जाओ। फिर एक बार श्रीमती सोनिया गांधीजी से मिलने जाना था। वहाँ ३-४ घंटे लग गए, सो हम शाम को सात बजे मंदिर लौटे। सभी ने कहा कि मंदिर जाकर पहले चाय-कॉफी पीनी पड़ेगी। मंदिर में जैसे ही घुसे कि गुरुजी ने सेवक से कहा – *इन सभी को पहले चाय-कॉफी पिलाओ।* मेरे लिए जैसे ही कॉफी आई, मैंने तो पीनी शुरू कर दी। तो, गुरुजी ने तुरंत कहलवाया कि *यह शोभना सारे गाँव को समझाएगी कि हमें पहले भगवान को भोग लगा कर खाना चाहिए, पर खुद सीधा पेट में डाल लेती है।* यूँ टोक कर भी जीव को मूर्ति में रखने का कैसा उद्यम! और हम कैसे कि इतने अनुभव होने के बाद भी जीवदशा में ही रहते हैं!!

* परछाईं और गार्गी बहुत छोटे थे, तब प.पू. गुरुजी ने कहलवाया था कि हमारी दो गाड़ियाँ तुम्हारे यहाँ पार्किंग में हैं। हम जब लेने आएंगे, तो डॅमरॅज चार्ज दे देंगे।

  मुझे तब ऐसा लगा कि अभी घर में एक गाड़ी है; आगे जाकर शायद हमें प.पू. गुरुजी को मंदिर की सेवा के लिए दो गाड़ियाँ भेंट में देनी होंगी। लेकिन परछाईं जिस दिन भगवान भजने के लिए निकली, उसी दिन प.पू. गुरुजी ने मुझे माला भिजवाई और कहलवाया कि *यह हमारी एक गाड़ी का डॅमरॅड चार्ज।* तब मुझे ख्याल आया कि तो अब दूसरी गाड़ी बाकी रही। लेकिन गार्गी में तो ऐसे कोई गुण नहीं कि भगवान भजे। खूब चंचल, स्वतंत्र और मॉडर्न; लेकिन खूब प्रेमी भी। उसे प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी और बहनों के साथ पहले से ही लगाव। स्कूल में छुट्टियाँ होती, तो बहनों के पास रहने जाती। मुझे लगता, क्या यह भगवान भज सकेगी? इसी दौरान मेरे ससुर जानी साहेब अक्षरनिवासी हुए और प.पू. पप्पाजी के स्वहस्त से

लिखा आशिष् पत्र आया। उसमें उन्होंने लिखा था, ***'तुम्हारी दोनों लड़कियाँ भगवान भजती हैं, तो तुम तो सुखी हो गए।'*** तब इस बारे में गार्गी का कुछ पक्का नहीं था। लेकिन, मुझे विश्वास हो गया कि प.पू. गुरुजी ने तो कहा ही था और प.पू. पप्पाजी ने भी ठप्पा मार दिया, सो यह भी भगवान तो जरूर भजेगी ही। सच में, **प.पू. दीदी ने भगवान भजने की पहल करके उत्तर भारत की बहनों के लिए रास्ता खोल दिया। खुद काँटों के रास्ते पर चल कर, अब आने वाली बहनों के लिए क़ालीन बिछा कर सुगम कर दिया है।**

* परछाई भगवान भजने के लिए घर से विदा हुई। उस समय तो खुशी-खुशी विदा किया, लेकिन दूसरे दिन सुबह से मेरा मोह मुझे परेशान करने लगा – वहाँ क्या खाएगी? कैसे रहेगी? वगैरह। साथ ही साथ रोना भी सतत जारी रहा। आँखों से आसूँ तो थमते ही नहीं थे। हाँलाकि मेरी ही इच्छा थी कि दोनों बेटियाँ भगवान भजें। ऐसा पंद्रह-बीस दिन चला। मंदिर में जाऊँ या घर पर होऊँ, रोती ही रहती। फिर प.पू. गुरुजी को प्रार्थना लिख कर भेजी कि मेरा मोह टालने में आप ही समर्थ हो, आप ही मुझे इसमें से निकालो... साथ ही साथ मैंने प.पू. दीदी से भी प्रार्थना की कि आप मेरे लिए भजन करो। तो, दीदी बोले कि मैं भी आज आपके लिए प.पू. काकाजी की समाधि पर प्रदक्षिणा करूँगी और... दूसरे दिन सुबह से अंतर में शांति हो गई।
* एक बार हमने **प.पू. गुरुजी** से पुछवाया कि आप तो **अतिशय बुद्धिशाली, अतिशय प्रेमी, अतिशय भजनिक, जाग्रत हैं तथा आपकी कार्यशैली भी ग़ज़ब की है,** जबकि हम सभी साधारण व्यक्ति हैं; तो क्या आपको कभी भी प.पू. काकाजी से प्रश्न नहीं होता कि मुझे ऐसे समाज में कहाँ रख दिया? तो उन्होंने कहलवाया कि *नहीं, मैं दिल से मानता हूँ कि मेरी बुद्धि की तीक्ष्णता को कम करने के लिए ही तुम सभी को रखा है।* सच ही, **हर प्रसंग पर नई-नई और विविध रीति से हमारे साथ वर्त कर स्वयं को हमारे मुताबिक ढाल कर सभी को संभाला है।** कितने ही प्रसंगों पर दिव्य रूप से साथ रहे हैं। इसके अलावा, **मान देकर या मानभंग करके, खूब लाड़ लड़ा कर या उपेक्षा दिखा कर, नाराज़गी दर्शा करके या प्रसन्नता दिखा कर हमेशा जीव के पक्ष में रहे हैं। हर एक को आगे ले गए हैं।**
* **छोटी से छोटी बात हो – चाहे व्यावहारिक हो या आध्यात्मिक – लेकिन प.पू. गुरुजी प.पू. काकाजी को आगे रखते ही हैं।** हमेशा कहते हैं कि *यह मुझे प.पू. काकाजी ने सिखाया था और हम अपनी तुच्छ बुद्धि का प्रदर्शन करने के लिए आतुर होते हैं! अपना ही परिचय देने के लिए सूक्ष्म रूप से भी लालायित रहते हैं।*

  मेरा अंग (स्वभाव) महिमा गाने का है। मुझे किसी के भी आगे प.पू. गुरुजी की या सत्संग की महिमा गाने की आदत-सी है। परछाई की जब किडनी फेईल हुईं, तब अमदावाद से मेरी कज़िन डॉ. वर्षा त्रिवेदी को यहाँ बुलाया था। प.पू. गुरुजी ने मुझे कहलवाया कि उनसे सत्संग की बातें करना। मैंने गुरुजी से कहलवाया कि मैं फिलहाल उससे सत्संग की बातें कैसे करूँ। मेरा अपना मन ही परछाईं के कारण डूबा हुआ है। तो बोले – *उसमें क्या? ज़्यादा से ज़्यादा धाम में जाएगी।* मैंने कहा धाम में जाए, उसकी चिंता नहीं है; दोबारा यहीं आने वाली है। लेकिन जिन यातनाओं में से उसे गुज़रना पड़ेगा, वह सोच कर उदास

हो जाती हूँ। तो, उन्होंने एक साखी गाई– *‘आगे सुख है बहुत अधिक...’* फिर दोबारा कहलवाया कि डॉ. वर्षा से सत्संग की बातें करना। उन्हें दिल्ली घुमाने के लिए ले जाते हुए गाड़ी में मैंने तीन-चार घंटे जो सत्संग की बातें कीं तो मैं खुद भी बल में आ गई। यूँ, इतने वर्षों के बाद प्रतीति करवाई कि अभी तक **दूसरों को सत्संग की बातें करवा कर उन्होंने मेरा अपना सत्संग ही पक्का करवाया है।** तब तक तो मेरे मन में गलतफ़हमी थी कि मैं महिमा की बातें बहुत अच्छी कर सकती हूँ।

गुरुजी का हरिभक्तों के साथ इतना अपनापन और भक्तों की इतनी महिमा कि भक्तों के आगे उन्होंने किसी चीज की कोई गिनती नहीं रखी। इसीलिए संत, सेवक और बहनें भी ऐसे ही सुहृद्भाव से जीते हैं, जिससे भक्तों को कभी भी अलगाव नहीं लगता।

* परछाईं की दोनों कीडनी फेईल हुईं, तब प.पू. गुरुजी ने कहा कि *यह बीमारी महाराज ने भेजी है, उसकी सेवा में लग पड़ो।* सभी बहनें सेवा में ऐसी लगीं कि प्राईम मिनिस्टर की लड़की को भी ऐसा ढाढ़स, ऐसा प्रेम या सुविधा नहीं मिले। उसमें **पू. स्वाति दीदी** ने तो सतत उसके साथ रह कर ‘माँ’ की भाँति संभाला। हक़ीक़त में तो मैं भी उसे इतना नहीं संभाल सकती थी, जितना उन्होंने उसकी छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखा है। परछाईं को डायालीसीस के लिए ले जाते, तो खास बड़ी गाड़ी लेते और सीट पर रजाई बिछा कर उसमें सुला कर ले जाते, ताकि उसे धक्के न लगें। पू. दीक्षा दीदी, पू. नित्या, पू. गंगा ने भी अमदावाद में उसकी सेवा में कोई कसर नहीं रहने दी। अमदावाद के हरिभक्तों ने तो प.पू. गुरुजी से कहा था कि यहाँ तो मानो **‘किडनी उत्सव’** हो गया है। भक्त रोज टीफिन में विविध व्यंजन भेजते।

हे प्रभु! ऐसे समाज में रहने का मौका मिला है, तो स्वभावरूपी छोटी-छोटी कनकियों को पिघला कर, अखंड आनंद और अहोहोभाव में ही रहें; **हम कृतघ्नी न हों** ऐसी प्रार्थना।

– शोभना जानी, दिल्ली

सौरभ - १७

Jay Swaminarayan!

...My life is centered around Him (Guruji) now. Everything about around me is filled with Guruji. His voice reverberates around me all the time...

Guruji, came into my life by my sheer luck.It was a coincidence that I met Anuradha, Guruji's devotee who is as a daughter to Him. I saw a peace on her face which really made me wonder the reason behind it. She spoke about guruji. An interest came within me to see guruji and seek His blessings. That time I was going through one of the worst phases in my life. So, I knew this was God's way of showing me the right path to attain strength to overcome all the difficulties. God get me through Guruji. He listened to my difficulties

patiently thro' Sevak, conveyed me to keep patience and assured me that everything would become alright. I trusted Him, believed Him and followed whatever He asked me to do.

Through Didi, Guruji conveyed all the messages. Didi used to speak to me for hours patiently, listened to all my woes, corrected me wherever I was wrong and told me to Keep on chanting **'Swaminarayan Mantra'** to get the strength to face all odds. I did as I was asked to. Not even a single minute I was awake did I think of anything else other than Guruji.

And Guruji did the miracles. All the odds and tides in my life was washed away by His blessing. I got back my life which was at the brink of a break up. I am really thankful to Guruji and Didi for all the happiness they brought into my life and also my family.

— Deepa, Delhi

[हिन्दी अनुवाद]

जय स्वामिनारायण!

...मेरी जिंदगी के केन्द्र प.पू. गुरुजी ही हैं। मेरे इर्द-गिर्द सब कुछ उनसे ही भरा हुआ है। उनकी वाणी हर वक्त मेरे चारों ओर गूंजती रहती है...

मेरा परम सौभाग्य है कि गुरुजी मेरे जीवन में आए। यह महज़ एक इत्तफाक ही था कि गुरुजी की पुत्री समान अनुराधा संघवी से मेरी मुलाक़ात हुई। उसके चेहरे पर शांति की आभा को देख कर मेरे मन में इस आभा के पीछे के मूलभूत कारण को जानने की उत्सुकता उत्पन्न हुई। उन्होंने गुरुजी के बारे में मुझे जब बताया, तो मेरे मन में गुरुजी के दर्शन करने की और उनके आशीर्वाद लेने की भावना उत्पन्न हुई।

उस वक्त मैं अपने जीवन के एक सर्वाधिक मुश्किल दौर से गुज़र रही थी। अतः मुझे लगा कि **प्रभु ने मुझे जीवन की इन विषम परिस्थितियों से गुज़र जाने की शक्ति प्राप्त करने का उचित मार्ग दिखा दिया। गुरुजी के रूप में मुझे प्रभु मिले,** जिन्होंने सेवक के माध्यम से मेरी परेशानियों के बारे में धैर्यपूर्वक सुना *(क्योंकि स्वामिनारायण संप्रदाय के नियम के मुताबिक प.पू. गुरुजी लेडिज़ से डाईरॅक्ट बात नहीं करते।)* और मुझे धीरज रखने को कहलवाया। साथ ही आश्वस्त किया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। मैंने गुरुजी के प्रति आस्था एवं पूर्ण विश्वास रखते हुए, उनके बताए मार्ग का अनुसरण किया।

दीदी के माध्यम से मुझे गुरुजी के सारे संदेश मिलते। दीदी भी खूब धीरज से घंटों तक मुझसे बात करतीं और मेरा दुःख-दर्द सुनतीं। इसके अलावा, मेरी गल्तियाँ सुधारतीं और निरंतर **'स्वामिनारायण' मंत्र** का जाप करने के लिए कहतीं, ताकि मुझे सभी विषम परिस्थितियों का सामना करने का बल मिलता रहे। मैंने

ठीक वैसा ही किया, जैसा मुझे करने के लिए कहा गया। **जाग्रत अवस्था में मेरा एक भी पल ऐसा नहीं बीता, जिसमें मैंने गुरुजी के अतिरिक्त अन्य कुछ सोचा हो।**

और... इस प्रकार **गुरुजी ने चमत्कार कर दिया।** गुरुजी के आशीर्वाद से **मेरे जीवन की सारी कठिनाइयाँ दूर हुईं और मन के ज्वार-भाटे शांत हो गए। मेरा जीवन, जो लगभग टूटने के कगार पर था, मुझे वापिस मिल गया।** मेरी और मेरे परिवार की जिंदगी में खुशियाँ भर देने के लिए मैं गुरुजी और दीदी की तहेदिल से शुक्रगुज़ार हूँ।

– दीपा, दिल्ली

सौरभ - १८

જય સ્વામિનારાયણ

પરમ પૂજ્ય ગુરૂજી ‘મા’ જેવા સંત છે. ‘યોગી શતાબ્દી’ નિમિત્તે તેની તૈયારી રૂપે પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામિજી, પ.પૂ. ત્યાગવલ્લભસ્વામી, પ.પૂ. ગુરૂજી વગેરે સંતો કચ્છમાં પધાર્યા હતાં અને ગાંધીધામ ‘ચેમ્બર્સ’માં પ્રોગ્રામ હતો. હું આમાંથી કોઈ પણ સંતના યોગમાં નહીં અને સ્વામિનારાયણ અક્ષરપુરૂષોત્તમ સંસ્થા શું છે તેનો પણ ખ્યાલ નહીં.

ઑફિસેથી બપોરે ઘરે જમવા આવ્યો. ઠંડીના દિવસો હતા, આથી જમીને તડકામાં બ્હારે ખુરસી પર પેપર વાંચવા બેઠો’તો. તેમાં પ્રોગ્રામ વિષે વાંચ્યું અને ઑફિસે ગયો, તો ટેબલ પર **પૂ. મલ્કાની સાહેબ** દ્વારા પ્રકાશિત કાર્ડ જોયું ને પ્રોગ્રામમાં ગયો.

ત્યાં અમારા મિત્ર શ્રી દેવજીભાઈ સોરઠીયા, જે આ સંતોના પરિચયમાં હતાં ને એમના ઘરે પધરામણી કરવા લઈ જવાના હતાં; તે મને કહે કે તમારી ગાડી પણ સાથે જ લો, આપણે આ સંતોને લઈને ‘સિણાય’ જવું છે. એમના ઘરે પ.પૂ. ત્યાગવલ્લભસ્વામી તથા પ.પૂ. મોટાસ્વામી ‘મારે ઘેર આવજો છોગલાધારી’ થાળ બોલાતા હતાં– એ સાંભળીને મને આનંદ થયો.

રાતે અમે મલ્કાની સાહેબને ગેસ્ટ હાઉસે આવ્યા. પ.પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામિજી તથા સંતો ટ્રેઈનથી વડોદરા જવાના હતાં. અમે રેલ્વે સ્ટેશને મૂકવા ગયા અને વળતા ફરી ગૅસ્ટ હાઉસ આવ્યા.

ત્યાં, ખબર નહીં કેમ પણ પ.પૂ. ગુરૂજીને જોઈને મને આંતરિક પ્રેરણા થઈ અને ગુરૂજીને જઈને પૂછ્યું કે આપ આવતી કાલે અમારે ઘરે પધારશો? **ગુરૂજીએ મારી સામે જોયું. એમની આંખમાં પ્રેમની સતત ધારા વહેતી હોય એમ લાગ્યું** ને એમણે ‘હા’ પાડી.

બીજે દિવસે ગેસ્ટ હાઉસ જઈને મેં પ્રણામ કર્યા એટલે ગુરૂજીએ કહ્યું કે,*આપને ત્યાં સાંજના આવશું, સાદી ખીચડી બનાવજો.* સાંજના હું એમને લેવા ગયો. ગુરૂજી તૈયાર હતાં અને કહ્યું ચાલો. મલ્કાની સાહેબ, તેમના ધર્મપત્ની, તેમના પુત્ર અને પુત્રવધુને પણ એમણે સાથે ચાલવા કહ્યું. અમે અમારા બંગલા **‘વિજય’** પર ચાલીને આવ્યા.

હવે ખાસ અગત્યની વાત એ કે ગુરૂજી દિલ્હીથી મુંબઈ અને ત્યાંથી કંડલાની ફ્લાઈટમાં

પૂ. મલ્કાની સાહેબ સાથે ગાંધીધામ આવ્યા, ત્યારે ઍરપોર્ટથી કારમાં જતા અમારા બંગલા પાસેથી પસાર થયા હતાં. એ વખતે અમારાં વિસ્તારમાં બંગલા બહુ જ ઓછા અને અમારો બંગલો નવો જ બનેલો. બંગલાની વિશિષ્ઠ ડીઝાઈનથી ગુરૂજીને એ ગમી ગયેલો. તેમને આંતરિક ઇચ્છા થયેલી કે આ બંગલામાં આપણે જવું છે. આમ, મારા બંગલા ઉપર ગુરૂજીની દૃષ્ટિ પડી ગયેલી. આ વાત ગુરૂજીએ મને પાછળથી કરેલ.

જ્યારે અમે ગેઈટમાં દાખલ થયા, ત્યારે ગુરૂજીને થયું કે આ તો એજ બંગલો છે જે ઍરપોર્ટથી આવતા જોઈ મને ગમેલો અને જ્યાં જવાની મારી ઇચ્છા હતી. ઠાકોરજીએ આ ઇચ્છા પૂરી કરી!

આ સંદર્ભે બોલતાં ગુરૂજીએ એક વાર દિલ્હીમાં જ કહેલું કે આપણી ભાવના સાચી અને શુભ હોય, તો એને હાથ-પગ આવે છે ને મહારાજ પૂરી કરે છે.

આ પ્રસંગથી ગુરૂજીને મારા પ્રત્યે એક આત્મીયભાવ થયો ને એ માટે હું મારી જાતને સદ્‌ભાગી સમજું છું. **ગુરૂજીની માતૃભાવવાળી ભોળી આંખો મારા પર નિરંતર આશીર્વાદ વરસાવી, દરેક રીતે મારી રક્ષા કરે છે. આ કૃપાદૃષ્ટિ મારા પર અને મારા સમગ્ર કુટુંબ પર પડતી રહે, રક્ષા કરતી રહે અને પ્રગતિ કરાવતી રહે એવી ગુરૂજીના ચરણોમાં પ્રાર્થના!**

હું સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના સંતોથી અગાઉ પરિચયમાં નહીં, તેથી તેમના સ્ત્રીઓ બાબતના નીતિ-નિયમોથી પરિચિત ન્હોતો. મારા ઘરે ગ્રાઉન્ડ ફ્લોર પર કીચનમાં રસોઈ બનતી હતી; અમે ઉપરના માળે હૉલમાં સભા કરી સત્સંગ કરી રહ્યા હતાં. ત્યાં મારા ધર્મપત્ની જમવા માટે બોલાવવા અચાનક હૉલમાં આવ્યા. ગુરૂજીની સાથે આવેલ સેવકે એમને તરત રોકી લીધાં. હું નવાઈ પામી ગયો. પછી ખ્યાલ આવ્યો કે સંતો હોય, ત્યારે સ્ત્રીઓ બાબતે સંપ્રદાયના આવા નિયમો છે અને સેવકની આ નિયમ પાલનની ચેષ્ટાથી મને આનંદ થયો.

બીજે દિવસે ચેમ્બરમાં સભા હતી, એમાં એક ભાઈ બહુ જ લાંબુ બોલ્યા; ત્યારે અમારા કચ્છના એક એન.આર.આઈ. હરિભક્ત સભામાં ઊભા થઈને એકદમ ગરમ થઈ મોટા અવાજે બોલવા લાગ્યા કે અમે અહીં સંતોને સાંભળવા આવ્યા છીએ, બીજાંને નહીં. પણ, પછી એ ભાઈ બેસી ગયા ને પ.પૂ. ત્યાગવલ્લભસ્વામીએ કહ્યું કે હવે ગાંધીધામ **નગરપાલિકાના પ્રમુખ શ્રી ધીરૂભાઈ શાહ** પ્રવચન કરશે. આ પરિસ્થિતિમાં ધીરૂભાઈ ઊભા થયા અને શાંતિથી મહિમાની વાતો કરતાં શ્રી મલ્કાની સાહેબની 'એવીસ' બાબતે એમની પ્રગતિની ચર્ચા પણ કરી.

સભા પછી, જો શક્ય હોય તો શ્રી ધીરૂભાઈને ઘરે બોલાવવાનું ગુરૂજીએ મને કહ્યું. ધીરૂભાઈ મારા મિત્ર થાય, તેથી મેં એમને વાત કરી. ધીરૂભાઈ રાત્રે આવ્યા અને ગુરૂજીએ કહ્યું, '***ધીરૂભાઈ**ની એક વાત મને ગમી–*

પેલા હરિભક્ત ગરમ થઈને બોલ્યા એવા ગરમ વાતાવરણ બાદ તરત જ ધીરૂભાઈ બોલ્યા, પરંતુ બહુ જ શાંતિથી, એ ગરમીની અસર વગર બોલ્યા એ ખરેખર સારો ગુણ કહેવાય.'

એમને જાણે ગુરૂજીના અંતરના આશીર્વાદ મળી ગયા અને... ધીરૂભાઈ 'રાપર'થી ચુંટાઈ આવી ગુજરાત વિધાનસભાના પાંચ વર્ષ માટે અધ્યક્ષ બન્યા.

વળી, ઘરે સભામાં બાજુની રૂમમાંથી પૂ. મલ્કાની સાહેબના ધર્મપત્ની પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શન એટલાં ધ્યાનથી કરતાં ને ગુરૂજીનો એક-એક શબ્દ એટલા ધ્યાનથી સાંભળતા હતાં, એ જોઈ મને વિચાર આવ્યો કે આવા કરોડપતિના પત્ની પણ ધર્મ પ્રત્યે કેવી નિષ્ઠા ધરાવે છે અને ગુરૂજી પ્રત્યે સમગ્ર પરિવાર કેટલો બધો આદર ધરાવે છે.

ત્યારબાદ ગુરૂજી મને દિલ્હી આવવા ખાસ આગ્રહ કરતા. **આ આગ્રહમાં શિષ્ટાચાર ઓછો અને આત્મીય ભાવના ઘણી.** આ પ્રેમ ભાવનાનો તાંતણો મને છેક દિલ્હી સુધી જવા મજબૂર કરતો રહે છે.

કોણ જાણે ગુરૂજીની દૃષ્ટિમાં કઈ પ્રકારની પ્રેમભાવનાનું આકર્ષણ છે એ કાંઈ સમજાતું નથી, પણ માનસપટ પર એમની મૂર્તિ રહે છે અને મન એમના તરફ ખેંચાતું રહે છે. દિલ્હી જઈ પ્રભુ ભજન થાય એ મોટી વાત છે. દિલ્હીમાં 'મા' જેવો એમનો પ્રેમ અવિરત વરસતો રહે છે.

ઘણી વખત ઑડીટ કરવા માટે દિલ્હી જવાનું થતું, ત્યારે હું હૉટલમાં ઊતરતો અને ગુરૂજી જોડે વાત થાય ત્યારે તેઓ કહે કે તમારે હૉટલમાં ઊતરવું નહીં અને મંદિરમાં જ રહેવું ને મંદિરનો પ્રસાદ જમવો. મેં કહ્યું ગુરૂજી અહીં કંપનીને ખાતે રહેવાનું હોય છે, તો પણ ગુરૂજી કહે–નહીં, આપણે સત્સંગી અને આપણે હૉટલમાં નહીં, મંદિરમાં રહેવાનું અને જમવાનું. આમ **આપણી આસપાસનું વાતાવરણ અને આહારની પવિત્રતા વિષે ઉચ્ચ વિચાર રાખી ગુરૂજી કેટલો દાખડો કરે છે.**

ગુરૂજીનું આકર્ષણ મને ગાંધીધામથી દિલ્હી સુધી જવા પ્રેરે છે. **એમનું સાન્નિધ્ય- એમના દર્શન હૃદયમાં ઠંડક આપે છે.**

દિલ્હીમાં હું જાઉં એટલે રાજકીય નેતાઓને મળવા જવાનું થાય, ત્યારે ગુરૂજી ગાડીની વ્યવસ્થા પણ કરી આપે અને આપણી દરેક તકલીફોનું ધ્યાન રાખે. **માનવીને ધર્મ બાજુ દોરવા ગુરૂજીનો અદૃશ્ય પ્રેમ ખૂબ કામ કરે છે.**

– માવજીભાઈ સોરઠિયા
ગાંધીધામ, કચ્છ

[हिन्दी अनुवाद]

जय स्वामिनारायण!

...परम पूज्य गुरुजी 'माँ' जैसे संत हैं। 'योगी शताब्दी' की तैयारी के निमित्त प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. त्यागवल्लभस्वामी, प.पू. गुरुजी आदि संत कच्छ में पधारे थे और गांधीधाम 'चेम्बर्स' में प्रोग्राम था। इनमें से किसी भी संत से मेरा कोई संपर्क नहीं था और स्वामिनारायण अक्षरपुरूषोत्तम संस्था क्या है, इसके बारे में भी कोई जानकारी नहीं थी।

दोपहर को ऑफिस से घर भोजन करने के लिए आया था। सर्दी के दिन थे, सो भोजन करके मैं बाहर धूप में कुर्सी लेकर न्यूज़ पेपर पढ़ने बैठा था। उसमें कार्यक्रम के बारे पढ़ा और ऑफिस गया तो टेबल पर पू. मल्कानी साहेब द्वारा प्रकाशित कार्ड देखा और कार्यक्रम में गया।

वहाँ हमारे मित्र श्री देवजीभाई सोरठिया, जो इन संतों से परिचित थे, इन्हें अपने घर पधरामनी करने के लिए ले जाने वाले थे, उन्होंने मुझसे अपनी गाड़ी साथ में लेने के लिए कहा और बताया कि उन्हें संतों को लेकर 'सिणाय' जाना है। उनके घर प.पू. त्यागवल्लभस्वामी एवं प.पू. मोटास्वामी 'मारे घेर आवजो छोगलाधारी' थाल गा रहे थे, जिसे सुन कर मुझे आनंद हुआ।

रात को हम मल्कानी साहेब के गेस्ट हाऊस आए। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी तथा अन्य संत ट्रेन से वडोदरा जाने वाले थे। सो, उन्हें छोड़ने हम रेलवे स्टेशन गए और लौटते समय दोबारा गेस्ट हाऊस आए।

वहाँ, पता नहीं क्यों? लेकिन प.पू. गुरुजी को देख कर मुझे अंतर में प्रेरणा हुई और मैंने गुरुजी से पूछा कि क्या वे कल हमारे घर पधारेंगे। **गुरुजी ने मेरी ओर देखा। उनकी आँखों में से प्रेम की धारा निरंतर बहती हो, ऐसा लगा** और उन्होंने 'हाँ' कर दी।

दूसरे दिन गेस्ट हाऊस जाकर मैंने प्रणाम किया, तो गुरुजी ने कहा– *'आपके यहाँ शाम को आएंगे, सादी खिचड़ी बनाना।'* शाम को मैं उन्हें लेने गया। गुरुजी तैयार बैठे थे और कहा चलो। मल्कानी साहेब, उनकी धर्मपत्नी, उनके पुत्र और पुत्रवधु को भी उन्होंने साथ में चलने के लिए कहा। हम सब हमारी कोठी **'विजय'** तक चल कर आए।

अब खास रहस्य की बात यह कि गुरुजी दिल्ली से मुंबई और वहाँ कंडला की फ्लाईट में पू. मल्कानी साहेब के साथ जब गांधीधाम आए तब एयरपोर्ट से कार से जाते हुए हमारी कोठी के पास से गुज़रे होंगे। उस समय हमारे विस्तार में कोठियाँ बहुत ही कम थीं और हमारी कोठी नई ही बनी थी। विशिष्ठ डिज़ाईन के कारण गुरुजी को यह कोठी भा गई। इसमें जाने की उनकी हार्दिक इच्छा हुई। यूँ, मेरी कोठी पर गुरुजी की दृष्टि पड़ गई। यह बात गुरुजी ने मुझे बाद में की थी।

जब हम गेट में दाखिल हुए, तब गुरुजी को ख्याल आया कि *यह तो वही कोठी है, जो एयरपोर्ट से आते हुए देख कर उन्हें भा गई थी और जहाँ जाने की उनकी इच्छा थी। ठाकुरजी ने वह इच्छा पूरी कर दी!*

इस संदर्भ में एक बार दिल्ली में बात करते हुए गुरुजी ने कहा भी कि हमारी भावना सच्ची और शुभ हो, तो उसे हाथ-पैर आते हैं और महाराज पूरी करते हैं।

इस प्रसंग से गुरुजी को मेरे प्रति एक आत्मीयभाव हुआ और इसके लिए मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ। **गुरुजी की मातृभाव वाली भोली आँखें मुझ पर निरंतर आशीर्वाद बरसा कर, मेरी हर प्रकार से रक्षा करती हैं। यह कृपादृष्टि मुझ पर और मेरे समग्र परिवार पर पड़ती रहे, रक्षा करती रहे और प्रगति करवाती रहे ऐसी गुरुजी के चरणों में प्रार्थना!**

पहले मैं स्वामिनारायण संप्रदाय के संतों से परिचित नहीं था। सो, स्त्रियों के विषय में उनके नीति-नियमों का मुझे ख्याल नहीं था। मेरे घर में ग्राउन्ड फ्लोर पर रसोई में भोजन बन रहा था; हम ऊपरी मंज़िल के हॉल में सभा करके सत्संग कर रहे थे। वहाँ अचानक हॉल में मेरी धर्मपत्नी भोजन करने के लिए बुलाने आई। गुरुजी के साथ आए सेवक ने उन्हें तुरंत रोक लिया। मुझे अचंभा हुआ। फिर पता चला कि संत जहाँ बैठे हों, वहाँ स्त्रियों के बारे में संप्रदाय के ऐसे नियम हैं और सेवक द्वारा इस नियम पालन की चेष्टा देख कर मुझे आनंद हुआ।

दूसरे दिन चेम्बर में सभा थी। वहाँ एक भाई सा'ब खूब लंबा बोले। तब हमारे कच्छ के एक एन.आर.आई. हरिभक्त सभा में खड़े होकर गुस्से में एकदम ज़ोर से बोलने लगे कि *हम यहाँ संतों को सुनने के लिए आए हैं, दूसरों को नहीं।* फिर वो भाई तो बैठ गए और प.पू. त्यागवल्लभस्वामी ने कहा कि अब गांधीधाम **नगरपालिका के प्रमुख श्री धीरुभाई शाह** प्रवचन करेंगे। ऐसे गरम माहौल में धीरुभाई खड़े हुए और शांति से महिमा की बातें करते हुए श्री मल्कानी साहेब की 'एवीस' के बारे में उनकी प्रगति की चर्चा भी की।

सभा के बाद, यदि संभव हो तो श्री धीरुभाई को अपने घर बुलाने के लिए गुरुजी ने मुझसे कहा। धीरुभाई मेरे मित्र, सो मैंने उनसे बात की। धीरुभाई रात को आए और गुरुजी ने कहा,

'धीरुभाई की एक बात मुझे खूब जँची –

वह हरिभक्त गुस्से में बोले, तब भी ऐसे गरम माहौल में धीरुभाई बोले, लेकिन बहुत ही शांति से। उस गरम माहौल के तनिक-भी असर के बिना वे बोले, यह सच में एक अच्छा गुण है।'

उन्हें मानो गुरुजी के अंतर के आशीर्वाद मिल गए और... धीरुभाई 'रापर' से चुनाव जीत कर गुजरात विधानसभा के पाँच वर्ष के लिए अध्यक्ष बने।

इसके अलावा, घर में जहाँ सभा हो रही थी, उसके साथ वाले कमरे में पू. मल्कानी साहेब की धर्मपत्नी बहुत ध्यान से प.पू. गुरुजी के दर्शन करती हुईं, गुरुजी के एक-एक शब्द को ध्यान (गौर) से सुन रही थीं। यह देख कर मुझे विचार आया कि ऐसे करोड़पति की पत्नी की भी धर्म के प्रति कैसी निष्ठा है और गुरुजी के प्रति समग्र परिवार को कितना आदर है!

तत्पश्चात्, गुरुजी मुझे दिल्ली आने के लिए खास आग्रह करते। **इस आग्रह में शिष्टाचार कम और आत्मीय भावना ज़्यादा।** प्रेम भावना का यह धागा मुझे दिल्ली तक जाने के लिए मजबूर करता रहता है।

पता नहीं गुरुजी की दृष्टि में किस प्रकार की प्रेमभावना का आकर्षण है, वह समझ नहीं आता; लेकिन दिलोदिमाग़ पर उनकी मूर्ति छाई रहती है, और मन उनकी ओर खिंचता रहता है। दिल्ली जाकर प्रभु भजन होता है, यह बड़ी बात है। दिल्ली में 'माँ' जैसा उनका प्रेम निरंतर बरसता रहता है।

कई बार ऑडीट करने के लिए मुझे दिल्ली जाना पड़ता था, तब मैं हॉटल में ठहरता था। एक बार गुरुजी से बात हुई, तो बोले तुम हॉटल में मत ठहरा करो। मंदिर में आकर रहना और मंदिर का प्रसाद खाना। मैंने कहा गुरुजी यहाँ कंपनी के खाते पर रहना मिलता है। फिर भी गुरुजी बोले – *नहीं, हम सत्संगी हैं और हमें हॉटल में नहीं, मंदिर में रहना और भोजन करना चाहिए।* यूँ **हमारे इर्द-गिर्द के माहौल और आहार की पवित्रता के बारे में उच्च विचार रखते गुरुजी कितना परिश्रम करते हैं।**

गुरुजी का आकर्षण मुझे गांधीधाम से दिल्ली तक जाने की प्रेरणा देता है। उनका सान्निध्य-उनका दर्शन हृदय में ठंडक देता है।

मैं जब भी दिल्ली आता हूँ तो राजनैतिक नेताओं से मिलना रहता है। तब गुरुजी गाड़ी की व्यवस्था भी कर देते हैं। यूँ हमारी सभी तकलीफों का ध्यान रखते हैं। **मनुष्य को धर्म की ओर अग्रसर करने के लिए गुरुजी का अदृश्य प्रेम बहुत काम करता है।**

– मावजीभाई सोरठिया
गांधीधाम, कच्छ

सौरभ - १९

मई-जून २०१० का भगवत् कृपा अंक प्राप्त हुआ। 'याद कराने' वाला स्तंभ बहुत अच्छा लगा। सोचा, मैं भी अपनी तरफ से दो शब्द लिखने का प्रयास करूँ;ताकि प.पू. गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हो। प.पू. गुरुजी से मैं पहली बार वाराणसी में मिला था।

P. P. Guruji was on a visit to Varanasi when he was gracious to visit the residence of my friend and colleague Professor Ashok Kaul. Kaul called me and my mother to his residence and that was where we were face to face with P.P. Guruji. P.P. Guruji must have spent less than half an hour at Kaul's residence. While showering his blessings upon us, he invited us to the Holy Ashram at Delhi. Several months later letters from the Ashram announced P.P. Guruji's birthday celebrations which Kaul and his family managed to attend. A year later there was another announcement regarding P.P. Guruji's birthday. This time I had the blessings of P.P. Guruji to attend the great diwas. My old and ailing mother too was keen to be in attendance at the Ashram. We reached Delhi railway station wherefrom the car of a devotee brought us to the temple. At lunch time, I was on way to the large hall where lunch was being served. Suddenly, Mr. Malhotra, a devotee, called me back to the place where P.P. Guruji was himself having lunch along with a dozen odd devotees. P.P. Guruji asked me to eat there itself! I was thrilled, to say the least. Mr. Malhotra told me that P.P. Guruji inquired about me before asking Mr. Malhotra to get me to receive his benedictions. What more would a devotee need?

The birthday celebrations in the evening were festive, musical and colourful. There were several speakers on the dias who spoke about the celebrations. Mother and I were dropped at the raiway-station next day in the afternoon and mother found that the Sadhavis had filled her tiffin box with a variety of eatables. Mother stayed with the Sadhavis as per the tradition of the Ashram.

I wish P.P. Guruji Many Happy Returns of the auspicious Day and desire him to constantly extend his blessings on his devotees.

Humbly

Raj Nath Bhat

Professor & Head Department of Linguistics

Faculty of Arts

Banaras Hindu University, Varanasi 221005.

✡✡✡

12 मार्च 2010 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या पर

पू. कौशिकभाई (एरु)

...यहाँ आने का जी होता है, इससे भी ज्यादा, गुरुजी का प्रेम ही इतना है कि वे खुद ही हमें बुला लेते हैं... काकाजी जैसे स्वरूप की गोद में गुरुजी पले... शुरुआत से ही गुरुजी को देखते हैं। ऐसा कहा जाता है कि **'काकाजी तो सिंह पुरुष थे'**, अतः उनका चेला भी ऐसा ही होगा! और... जैसा कि काकाजी कहा करते थे – *'दास भी नहीं, दास का दास होना...'* गुरुजी आज हमारे सामने दास का दास बनकर रहते हैं... मैं यह निश्चित् रूप से मानता हूँ कि **हमें गुरुजी की जितनी महिमा है, उससे कई गुणा हमारी महिमा गुरुजी को है...**

गुरुजी नहीं बुलाएं, तो भी बार-बार आने के लिए मेरा मन करता है क्योंकि मुझे अपना बचपन याद आ जाता है, **वह अतीत यहाँ उभर आता है। जिसे हम 'घर-घर की सभा' बोलते हैं, सभी स्वरूपों के सान्निध्य में अकसर ऐसी ही सभाएँ होती थीं। फिर चाहे वे सभाएँ वी.पी. हॉल में हों, पी.के. में हों, चाहे हरिधाम में हों या फिर ताड़देव में हों। अक्षरधाम की पूरी कॅबिनेट – काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब के न केवल नज़दीक बैठना, बल्कि उनके साथ गोष्ठी करना, उनके आशीर्वाद प्राप्त करना - वह सारा माहौल याद आ जाता है...** अब तो समाज बहुत बढ़ गया है, लेकिन बड़े समाज में वो सब खो गया हो, ऐसा भी नहीं है। पर, **गुरुजी के पास आने के लिए कदम जो थिरकते हैं, वे इसलिए कि गुणातीत कुनबे के हम सब इकट्ठे होकर आनंद करेंगे। तो ये दिन उन दिनों और तब के आनंद की प्रतीति करवाते हैं।** वे ही शुभाशीष काकाजी, पप्पाजी एवं सभी गुणातीत पुरुष उसी ढंग से आज भी हम पर बरसा रहे हैं। ऐसा हर बार महसूस होता है और ये मानने की भी जरूरत है... जब मनुष्य में **विस्मय** खतम हो जाता है, तो सब कुछ रूक जाता है। चाहे कोई भी फील्ड हो – बिज़नेस हो या स्टडी हो, व्यक्ति तभी प्रगति कर पाता है, जब उसके अंदर विस्मयभाव बना रहे। **गुरुजी के यहाँ वह भाव सचमुच में सदैव ही बना रहा है।** अपने साथ गुरुजी हमें ऐसे जोड़ लेते हैं कि हमें ख्याल ही नहीं रहता। अपनी **चालीस साल की साधना में उन्होंने क्या किया? हम सभी को साथ में लेकर आनंद मनाते हुए एक कुटुंबभाव का रास्ता दिखाया।** गुरुजी को सचमुच धन्यवाद हैं... आपकी महिमा को और भी निखार सकें, ऐसा हमारा जीवन बने – यही आपके चरणों में प्रार्थना।

प.भ. लांबा साहब (दिल्ली)

...गुरुजी, दूसरों का ध्यान रखने वाले एक पुण्य आत्मा हैं... मुझे जब किसी प्रकार का भय होता है, तो, जैसे बच्चा अपनी माँ की उंगली पकड़ लेता है, वैसे ही मैं अपने ख्यालों में गुरुजी की उंगली पकड़ लेता हूँ और उनके साथ-साथ चलने लगता हूँ। उस समय गुरुजी मुझे पूरा सहारा देते हैं... मैं अभी इस समाज के बारे में अधिक नहीं बोल पाता। काकाजी-पप्पाजी के बारे में जब सभा में गुरुजी की जुबान से कुछ सुनता हूँ, तब मुझे ऐसा लगता है कि गुरुजी के रूप में मैं काकाजी के दर्शन कर रहा हूँ। काकाजी का पूरा रूप उनमें नज़र आने

लगता है। मैंने एक सभा में कहा था कि–

काकाजी ने बहुत ही सोच-विचार करके, बहुत ही अनुभव के साथ और भविष्य को जानते हुए गुरुजी को इस समाज को आगे ले जाने की रिस्पॉन्सिबिलिटी सौंपी होगी...

प.भ. भीखुभाई रबारी (वडोदरा)

...स्वामिनारायण के संत ऐसे नहीं है कि बस घर से निकल कर साधु बाबा बन गए... इन संतों, साधकों, युवकों और साधक बहनों द्वारा क्रान्ति लाई गई है। अभी चल रहा है न, **'महिला बिल पचास प्रतिशत', हमारे योगीजी महाराज, काकाजी, (पप्पाजी), हरिप्रसादस्वामीजी ने तो कितने सालों से अमल कर दिया है...** बहनों को भी न्याय मिले, उनके प्रश्नों का समाधान हो, उन्हें प्रभु से लगाव हो, इसीलिए काकाजी की प्रेरणा से गुरुजी ने यहाँ बहनों के लिए आश्रम 'अक्षरज्योति' बनाया है।

सेवेन्टी एट से मैं गुरुजी से परिचित हूँ। तो यही देखा है कि गुरुजी का प्रेमभाव का स्वभाव है... काकाजी भगवान धारक संत थे–संतों जैसे कपड़े नहीं पहनते थे, फिर भी वे संत थे। हमारी आरती–'जय सदगुरुस्वामी' पढ़ते हैं, बोलते हैं। उसके शब्द शांति से पढ़ें कि 'अड़सठ तीरथ चरणे, कोटि गया काशी।' वो अड़सठ तीरथ गुरुजी के चरणों में हैं।

दो दिन से मैं यहाँ आया हूँ। यहाँ के समाज का मैंने दर्शन किया... गुरुजी ने उत्तर भारत–दिल्ली, पंजाब, यू.पी.–में जो काम किया है, वह रेत में ज़हाज़ चलाने जैसा है। हमारे परम पूज्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का संकल्प था कि दिल्ली में मंदिर बने, तो उन्होंने यह काम पूर्ण किया। इसके पीछे उनका लगाव, मेहनत, ऐश्वर्य है, क्योंकि वे भगवान धारक संत तो हैं, वर्ना ऐसे समाज का निर्माण कोई सरल कार्य नहीं! यहाँ सब इंटलॅक्चुअल्स बैठे हैं, जो ऐसे ही नमन नहीं करते–पांव नहीं पड़ते। सबने इन्हें परखा होगा। दिल्ली में इससे पहले किसी ने अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति नहीं पधराई, गुरुजी ने पहले पधरा दी। साथ ही, गुरुजी ने सर्वदेशीय उठाव लिया है। उन्होंने काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, जशभाई साहब, दिनकरभाई, भरतभाई, वशी सबकी मूर्तियाँ लगाई हैं।

...वे सबको साथ में लेकर चलते हैं। भगवान स्वामिनारायण और काकाजी के संकल्प को उन्होंने साकार किया है। इसी प्रकार वे सभी साधकों-बहनों के जीवन की प्रेरणामूर्ति हैं। गुरुजी ने यहाँ जो काम किया है, उसका मैं भी साक्षी हूँ... यह संप्रदाय क्यों बढ़ता जा रहा है? क्योंकि स्वामिनारायण वाले सब सुखी हैं। सुखी क्यों हैं? भगवान स्वामिनारायण ने वचन दिए हैं कि मेरा आश्रित अन्न, वस्त्र से वंचित नहीं होगा। सुदर्शन चक्र जैसी 'शिक्षापत्री' दी है, जिसका तुम यदि पालन करोगे, तो जीवन में कोई दुःख नहीं आएगा... यहाँ व्यवस्था तंत्र देखकर हम भी दंग हो गए हैं। कल हमारे ठहरने की व्यवस्था मोतीलाल बाजवानजी के घर पर थी। थोड़े समय पहले ही उनकी पत्नी का देहांत हो गया है। ऐसे भक्त सुबह जल्दी उठ कर हमारे लिए चाय बनाते हैं। 'भक्त केवल ब्रह्म की मूर्ति'–यह ऐसे भक्त साकार करते हैं। गुरुजी ने इनमें यह भाव भर दिया है कि भक्तों की सेवा करोगे, तो बहुत पुण्य मिलेगा। सब खुद सेवा मांगते हैं। मैं जब यहाँ आया, दो-तीन मुरब्बी हरिभक्त मेरी नादुरस्त तबियत पूछने आए। इतनी अधिक चिंता! मैंने पहली बार ऐसा सब देखा। कैसा

समाज! **ऐसे समाज का दर्शन से जन्मों के पाप जल जाते हैं...** दिल्ली की इतनी सारी आबादी में आप सब जो बैठे हैं, उनका अहोभाग्य है कि ऐसे गुरुजी आपको मिले हैं और जीवन इतना अच्छा बना है। आप सभी को मौज में आनंद दे दिया है। पहले तो भगवान पाने के लिए ऋषि-मुनि कितना उद्यम करते थे, तब भी उनके हठ, मान और ईर्ष्या टलते नहीं थे। गुरुजी से संबंध होने के बाद ये सब कहाँ टल गए! **हरिप्रसादस्वामिजी 'आत्मीयता' का जो सूत्र लेकर चल रहे हैं, वह मुझे यहाँ खूब अधिक दिखाई दे रहा है। योगीजी महाराज की भाँति माँ जैसा प्रेम और काकाजी की जो रीति-नीति थी, उसी के अनुरूप गुरुजी चलते हैं।** काकाजी के मानसपुत्र हैं... सुबह इतने युवकों की सेवा-भावना देख कर मुझे आभास हुआ कि गुरुजी ने कितना परिश्रम किया होगा, इन सभी को इस दिशा में मोड़ने के लिए और उन्हें कुटुंबभाव से ओत-प्रोत करने के लिए। ऐसा दिव्य समाज उन्होंने तैयार किया है, इससे मुझे खूब आनंद हुआ है। यहाँ से मैं भी प्रेरणा लेकर जा रहा हूँ कि ऐसा ही हम भी करते रहें। जहाँ जाएं वहां यह संदेशा लेकर जाएं और इसमें हम भी जुड़ जाएं...

पू. निष्कामस्वामिजी (सांकरदा)

...गुरुजी सांकरदा बहुत रहे, वहाँ से उन्हें अतिशय लगाव... काकाजी और पप्पाजी के संकल्प – 'सारा गुणातीत समाज संप, सुहृद्भाव और एकता से जीवन जिए' की धुनी जमा कर गुरुजी यहाँ (दिल्ली में) बैठे हैं। योगी परिवार के अंदर यह आशीर्वाद-संकल्प साकार हों, इसके लिए वे खुद लगे हुए हैं... गुरुजी के जीवन पर एक दृष्टि डालें, तो खुद अक्षरविहारीस्वामिजी, कोठारीस्वामिजी के साथ उन्होंने दीक्षा ली थी; पर साथ ही साथ अक्षरविहारीस्वामिजी को वे बहुत महान मानते हैं। अपने पूजनीय बड़े मानते हैं। इसका कारण उन्होंने कई बार बताया है कि उनसे काकाजी ने हरिप्रसादस्वामिजी और अक्षरविहारीस्वामी को आगे रख कर काम करने के लिए कहा था। गुरुजी किस प्रकार बड़े पुरुष की आज्ञा-वचन का अनुसंधान रखते हुए जीवन जीते हैं, यह हम उनकी जीवनशैली में साकार देख रहे हैं। गुरुजी के लिए अक्षरविहारीस्वामिजी का माहात्म्य होना तो स्वाभाविक है, पर वे तो संबंध वाले हम जैसे संतों, जो उनके आगे बहुत छोटे हैं, उनसे भी काकाजी, पप्पाजी व स्वामिजी जैसा ही माहात्म्य रखते हुए वर्तते हैं और हमारे साथ भी वैसा ही संबंध रखते हैं... तो, स्वरूपों ने २० जनवरी को जो संकल्प लिया और अलख जगाई, उस संकल्प के अनुरूप हम भी अपने 'स्व' – अपने 'अहम्' को छोड़ कर आपकी ताल से ताल मिला कर, संपूर्ण रूप से साथ देकर यह संकल्प साकार करने के पात्र बनें – यही आज के शुभ दिन प्रार्थना!

पू. दासस्वामिजी (हरिधाम)

ऐसे अवसर पर मैं मानता हूँ कि मेरे लिए प्रवचन का नहीं, बल्कि स्मृति का अवसर है... वे सब स्मृतियाँ करते हुए आज मुझे जिस हर्ष की अनुभूति हो रही है, उसका मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता।

इतने सालों में मैंने क्या प्रोग्रेस की, यह तो काकाजी महाराज, स्वामिजी महाराज जैसे सत्पुरुष ही बता सकते हैं। लेकिन, **गुरुजी ने जो अद्भुत कार्य कर दिए हैं, उसके हम जरूर साक्षी हैं।** साक्षी शब्द तो बहुत सामान्य शब्द है। जैसे दूध में शक्कर होती है, वैसे सोखड़ा, सांकरदा, ताड़देव-पवई के सभी योगेश्वर

और विशेष रूप से **गुरुजी के साथ जब, जहाँ, जैसे जितना भी रहे, उनके वर्तन में वैसी ही आत्मीयता और प्रेमभाव देखने के लिए मिला**... सो, दूध में चीनी मिली हो, तो उसे साक्षी नहीं बोला जाता, चीनी दूध में मिल कर एकाकार हो जाती है।

...जब हम भारत साधु समाज में रहते थे, तो रविवार के दिन भी मुश्किल से पकई साहेब जैसे मुक्त ही आते थे। फिर जब ए-११६ और ए-१०३ में आकर रहे, तब सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसे भव्य और दिव्य कार्य की फलश्रुति में हमारे गुरुजी इतने सर्वोपरि और श्रेष्ठ निमित्त बनेंगे! गुरुजी के जीवन की यही विशिष्टता है।

गुरुजी का योगीजी महाराज के साथ विशेष संबंध था। गुरुजी की साधना के कुछ प्रसंग हमें सुनने चाहिएँ और उन पर गौर करके उसमें से बोध लेना चाहिए... साधना काल के दौरान गुरुजी ने योगी बापा को कहा था कि *मेरी प्रकृति तो ऐसी है कि इस परिवेश में मैं चौबीस घंटे भी नहीं रह सकता और मुझे लगता है कि शायद मैंने कोई भूल कर दी है।* तो बड़ी श्रद्धा और भरोसे से आशीर्वाद देते हुए बापा ने कहा–
मकंद, तुम्हें लगता है कि तुमने कोई गलती की है, लेकिन तुम्हें दीक्षा देने में शास्त्रीजी महाराज ने तो कोई गलती नहीं की। बस, तुम मगन रहना, आनंद में रहना, मस्त रहना। मेरे हिसाब से इतने सालों में **गुरुजी ने और कोई साधना नहीं की, लेकिन बापा के इस वचन का भरोसा रख के, यह सबसे बड़ी कठोर साधना जरूर की। योगी बापा, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज या स्वामिजी महाराज ने गुरुजी से जो कहा, उसमें अपनी किसी शक्ति, साधना, ताक़त या किसी भी प्रकार के नेगेटिव ख्याल को गिने बिना, गुरुजी मन, बुद्धि के पार का भरोसा करके, टोटल समर्पितभाव से जिए हैं।** इसी वजह से आज दिल्ली में ऐसे गुणातीत समाज का उद्यान पल्लवित हो सका है–जिसे देख कर बहुत खुशी होती है...

बगल में हमने जो **'तीन फरवरी पार्क' देखा, वहाँ पहले क्या था?** यह स्थान टट्टी जाने के लिए था। **गुरुजी ने पार्क बनवा कर उस परिसर को 'नंदन वन' में परिवर्तित कर दिया है। दुर्गन्ध की जगह सुगन्ध हो गई। पत्थरों-चट्टानों की जगह हरियाली हो गई। तो, आप दिल्ली वाले इनका भरोसा जरूर करना।** पिछले चालीस वर्ष का साक्षी होते हुए कहता हूँ कि आपको ऐसे गुरुजी मिले हैं, जिनके सिर पर योगी बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी महाराज जैसे ज्योतिर्धरों का हाथ है और वे खुद भी उनके मानस पुत्र बने हुए हैं। **तो हमारे जीवन में जो भी गंदगी, बुराई, कठिनाई, कठोरता, दुर्बलता, कमियाँ या त्रुटियाँ हैं, गुरुजी निश्चित् रूप से उन्हें दूर करके, हमारे जीवन को सुगंधित, पल्लवित बनाएँगे।**

गुरुजी तो हमसे सखाभाव रखते हैं, लेकिन वे बहुत पूज्य हैं, दिव्य हैं और हमसे तो बहुत आगे हैं, ऐसा मैं दिल से मानता हूँ। तो, मेरे लिए आप खास प्रार्थना करें कि आप निमित्त बने और खुद को धन्य किया, इसके अतिरिक्त हज़ारों का जीवन धन्य बना रहे हैं; यूँ मुझे हज़ारों का जीवन धन्य नहीं बनाना, पर मेरा जीवन तो जरूर धन्य बनाना है। सो, हम भी जहाँ जिस स्वरूप के सान्निध्य में हैं, उनकी कृपा से अपना जीवन धन्य बना सकें। जैसे आप योगी बापा, काकाजी महाराज और गुणातीत समाज की सच्ची पहचान बने, ऐसे ही हम भी 'हां हां गड़थल' करते हुए, सुहृद्भाव और निर्दोषबुद्धि से जीकर, ऐसी सच्ची पहचान बन सकें...

प.भ. हेमंतभाई मर्चंट (मुंबई)

...हम बहुत छोटे थे, तब से गुरुजी हमारे कुटुंब के साथ जुड़े हैं। वे मुझसे करीब बीस साल बड़े हैं, हमारे बड़े भाई जैसे हैं... जब भी पौषी पूनम की शिविर में विद्यानगर जाते थे या कोई भी फंक्शन होता था और ऐसा एनाउन्स होता था कि अब मुकुंदजीवनस्वामी प्रासंगिक उद्‌बोधन करेंगे, तो सभी एकदम सतर्क होकर उन्हें सुन कर जस्टिफाई करते थे। उनकी कोई न कोई बात सब के दिल को छू जाती थी। वो इसलिए कि वे खुद ऐसा जीवन जीते थे।

गुरुजी का जो जीवन हमने देखा है, उसमें अनऑर्थोडॉक्स साधु और एक अनऑर्थोडॉक्स गुरु और उनका एक अनऑर्थोडॉक्स रिलेशन है। सामान्य रीत से तो भगवा कपड़े वाला साधु किसी गृहस्थ को अपना गुरु स्वीकार करे, वो समाज में कहीं देखने को नहीं मिलेगा। नॉर्मली तो कोई गृहस्थ ही भगवा कपड़े वाले के पांव छूते हैं। पर, यहाँ कुछ अलग-सा था। लेकिन जो था, उससे श्रेष्ठ उनके जीवन में हो भी नहीं सकता था... गुरुजी का जो जीवन देखा है कि बौद्धिक भावना में से भावात्मक बुद्धि में उन्होंने ट्रान्सॅन्ड किया...

अधर्स थॅन, गुरुजी वॉज मोर कम्फर्टेबल एक्सेप्शन–ऐसा लग रहा था। लेकिन वो एक्सेप्शन को भी उन्होंने डिवाईन कर दिया... आज वे सचमुच काकाजी को अखंड धारे हुए हैं। मोस्ट एक्सेप्शनल डिवाईन स्पिरिच्युअल सक्सेसर ऑफ काकाजी... उन्होंने सत्संग में आत्मबुद्धि और प्रीति का जो संवर्धन किया है, उसमें पूरे गुणातीत समाज में दिल्ली मंडल का स्थान अनोखा है, वो गुरुजी का काम है। बाहर से हमें ऐसा लगता है कि बहुत आनंदी हैं, बहुत रमूजी हैं, बहुत मजा कराते हैं। चॉकलेट और आईसक्रीम खिलाते हैं, ये तो कराते ही हैं। पर, वे कहीं भी थोड़ा-सा एक्सेप्शन चला नहीं लेते। गुरुजी की हीरक जयंती के समय 'अंबा' थियेटर में सभी स्वरूपों के साथ वे 'सरदार' पिक्चर दिखाने ले गए थे। संत-नार्मली कोई पिक्चर यदि देखे, तो उनको मना करेंगे कि पिक्चर मत देखो, पर यहाँ तो थियेटर में ही पिक्चर दिखाई! वो पिक्चर सरदार बल्लभभाई पटेल का था, लेकिन वो जो हिम्मत की, वो क़ाबिले तारीफ़ है। तो जो मैं एक्सेप्शन की बात करता हूँ, वो यही कि जहाँ जरूरत पड़ी, कल को ट्रान्सेड कर दिया। ये गुरुजी हैं! पर, वो क्यों किया? इससे गुणातीत समाज में काकाजी-पप्पाजी की महिमा रख सकते हैं। इसके लिए उन्हें कोई क्या कहेगा, वो कभी नहीं सोचा... वशीभाई अभी बता रहे थे कि गुरुजी जो कुछ करते हैं, वो बेंचमार्क हो जाता है। वो एक बेंचमार्क साधु हैं, उनका एक बेंचमार्क परिवार है। उनका जो भी कुछ सर्जन है वो बेंचमार्क है... बहुत साल पहले हमारे के.सी. सिंह साहब मंदिर का दर्शन करके सबसे पहले जब मुंबई में आए, तो वशीभाई ने पूछा कि दिल्ली मंदिर कैसा लगा? उस टाईम आई.एस.ओ. नाईन थाऊझेन्ड आई थी, तो के.सी. सिंह ने कहा कि ये तो आई.एस.ओ. बेंचमार्क वाला मंदिर है। वो स्टांडर्ड गुरुजी ने मेइन्टेइन रखा। पहला नंबर आ सकता है, लेकिन वो नंबर मेइन्टेइन करना, तो वो तो जो मेइन्टेइन करता है उसे ही मालूम होता है। तो गुरुजी ने वो बेंचमार्क अब तक मेइन्टेइन किया है। गुरुजी भजनीक भी हैं... काकाजी बोलते थे कि उन्होंने रात को उठ-उठ कर खूब भजन किया है। उन्होंने कोई शारीरिक परिश्रम जोर-शोर से नहीं किया है, लेकिन उन्होंने जो किया वो शायद और कोई नहीं कर सकता था। ऐसे पुरुषों की साधना के बारे तो हम क्या बोलें। लेकिन, उन्होंने हम सबको

जो रास्ता दिखाया है, उसके लिए गुरुजी तो धन्यता के पात्र हैं ही, साथ ही साथ उनका समाज भी है। इतने सालों पहले से पकई साहब और अभी नवीनभाई बैठे हैं। शुरुआत से आज तक नवीनभाई और उनका पूरा परिवार सेवा में रत है। आनंदी दीदी को जब 'गुड्डी' बोलते थे, तब से हमने देखा है। आज जबरदस्त प्रेरणादाई संत हो गई हैं। पूरा समाज मल्कानी साहब, दालिया साहब... मैं किस-किस का नाम लूँ, किसका न लूँ। ये सभी ने गुरुजी को जो अद्‌भुत सर्पोट दिया है। जबरदस्त उतार-चढ़ाव में उनका साथ पकड़ कर रखा है। गुरुजी के प्रागट्य दिन पर हॅपी बर्थ डे अभिनन्दन के लायक ये पूरा समाज है। उन सभी को मेरा खास-खास प्रणाम है...

पू. स्नेहलस्वामिजी (सांकरदा)

गुरुजी – यानि बापा, काकाजी और पप्पाजी के मानसपुत्र! ...हम यहाँ अपने मन को नीरव बनाने के लिए इकट्‌ठे हुए हैं। अपने आपको प्रभु में रहता करना है। **सत्संग करते हैं, तो संत के गुण आने ही चाहिएँ।** गुरुजी जैसे मूर्ति-सिद्ध हमें बन ही जाना चाहिए। **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने सात मुद्दे निकाल कर दिए थे।** वे गुरुजी के जीवन में तादृश दिखते हैं...

❊ दो हाथ जोड़ कर संत जो कहें वह कर लें, वो मूर्ति की स्मृति। गुरुजी में हमें यह देखने को मिलता है...

❊ असाधारण माहात्म्य। गरज और खप से **लगे ही रहना** वो भी है मूर्ति की स्मृति! १९७४ में गुरुजी हमेशा के लिए दिल्ली आ गए... काकाजी के प्रति असाधारण लगाव और माहात्म्य के कारण उन्होंने काकाजी का वचन माना और वे **लगे ही रहे।** तो आज एक पूरा समाज यहाँ खड़ा हो गया...

❊ किसी का अभाव न ले - दोष न देखे, प्राप्ति का जोश रहे – यह मूर्ति की स्मृति! गुरुजी ने हर प्रसंग में, कैसी भी परिस्थिति आई, पर किसी का अभाव नहीं लिया। **हम प्रभु को कर्ताहर्ता मानेंगे, तो हमें किसी के अवगुण दिखाई नहीं देंगे।** छोटे से छोटा मुक्त हो, लेकिन गुरुजी को कभी किसी का अभाव नहीं आया। इसीलिए गुरुजी का प्रवचन मुझे बहुत जँचता है, उन्होंने बहुत सारे प्रसंग तादृश कर लिए हैं। वह कब बन सकता है? जब तुमने वह दोहरा-दोहरा कर 'ईदम्' कर लिया हो...

❊ तुम अपना कौशल भगवान और भगवान के भक्तों के लिए उपयोग करो, वह है मूर्ति की स्मृति! 'भगवत् कृपा' पत्रिका में बहुत अच्छे लेख और गुरुजी के प्रवचन आते हैं। उसमें बहुत अच्छी मननीय बातें लिखी होती हैं। गुरुजी ने जो अनुपम कृपा की है, वह यह कि काकाजी ने अंतर्धान होने से पहले २६ जनवरी १९८६ को जो अंतिम संदेश गुणातीत समाज को दिया। वह एक पुस्तिका के रूप में दे दिया। एक-एक अक्षर वैसे का वैसा ही उसमें उन्होंने छापा है। **काकाजी का वह प्रवचन हमारे जीवन का हार्द है।** यूँ, गुरुजी अपने कौशल और बुद्धि के तंत्र के मुताबिक काकाजी के इतने प्रसंग दोहरा-दोहरा कर हमें बताते हैं। सच में गुरुजी धन्य हैं।

❊ किसी का देखना नहीं और सत्पुरुष जितना करने के लिए कहें, उतना कर लेना – वो मूर्ति की स्मृति! कोई संबंधवाला लल्लू जैसा हो, उसके भी अवगुण गुरुजी को कभी दिखाई नहीं दिए।

❋ तुम सबका गुरुजी के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति का संबंध है। तो अपने अंग के मुताबिक गुरुजी के वचन का पालन करो। उन्हें अंतर्यामी मान कर आज्ञा पालोगे, तो लक्ष्य की प्राप्ति हो जाएगी। पप्पाजी कहते कि गुरुजी को काकाजी के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति थी, अंतर्यामी मान कर उन्होंने काकाजी की आज्ञा पाली।

❋ गुरुजी का माहात्म्ययुक्त समागम करो... गुरुजी जैसे गुण हम में भी आ जाएं, इस प्रयोजन से वर्तना है। गुरुजी ने बापा और काकाजी का माहात्म्ययुक्त समागम किया, तो गुरुजी में उनके गुण आ गए... जैसे-जैसे गुरुजी की आज्ञा का पालन करते जाएंगे, वैसे-वैसे गुरुजी का हम पर भरोसा बढ़ता जाएगा... गुरुजी बापा, काकाजी और पप्पाजी के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करके आज मूर्तिसिद्ध बन गए... गुरुजी ने काकाजी को अपने वश में कर लिया, ऐसे ही हमें गुरुजी को अपने वश में कर लेना है...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

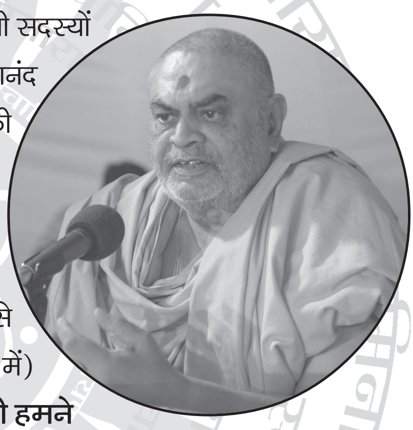

...गुरुजी हर बार अपने जन्म दिन पर योगी परिवार के सभी सदस्यों को इकट्ठा करते हैं और योगी परिवार के सदस्य इकट्ठे होकर आनंद मंगल करें, शुभ भावना परस्पर एक्सचेंज करें, यही उनके अंतर की भावना होती है।

...सबसे अहं बात यह है कि तीन-चार साल से गुरुजी के जन्मदिन पर यहाँ योगी परिवार के सम्मेलन में हम शामिल होते रहे हैं। इसी से हमें प्रेरणा मिली, और निष्कामस्वामिजी ने अभी जैसे बताया कि **बीस जनवरी** (बसंतपंचमी) **को हमने जो** (सांकरदा में) **उत्सव किया, उसकी प्रेरणा भी असलियत में तो गुरुजी से ही हमने ली है। इसी से प्रेरित होकर उस दिन हरिप्रसादस्वामिजी, साहेबजी, दिनकरभाई, गुरुजी–हम सब ने इकट्ठे होकर हाथ में हाथ मिलाकर संकल्प किया कि अखिल गुणातीत समाज में संप, सुहृद्‌भाव एवं एकता दृढ़ करने के पप्पाजी के संकल्प को प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की अगुआई में साकार करने के लिए कटिबंद्ध रहेंगे। प.पू. स्वामिजी ने भी आशीर्वाद दिया कि इस उत्सव में आपने जो संकल्प किया है, पप्पाजी का वह संकल्प अवश्य पूर्ण होगा और समग्र गुणातीत समाज में संप, सुहृद्‌भाव एवं एकता के स्वर्णिम सूर्य का उदय होगा ही!** यह जो आशीर्वाद मिला है, **उसकी प्रेरणा हमने अपने मित्र-सखा मुकुंदजीवनस्वामी से ही ली है।** यह पहली बात मैं आप सबको बताने जा रहा हूँ।

दूसरी बात यह है कि गुरुजी के बारे में सबने बहुत कुछ बताया, उनकी महिमा बहुत गाई। उनकी अच्छी-अच्छी बातें बताईं! ये बातें असलियत में सबके लिए अच्छी हैं। ये बात सुनने-करने में अच्छी है; उनके साथ संबंध बनाने के लिए भी अच्छी है क्योंकि गुरुजी हमारी तकलीफों, मुश्किलों, दिक्कतों यानि आधि-व्याधि-उपाधि में सहाय रूप होते हैं; हमारा काम करते हैं; हमें सहकार देते हैं... यह सब तो होता ही रहता है। प्रभु को धारे हुए गुणातीत पुरुष जो भी संकल्प करेंगे, उससे हम सब अपने-अपने कार्य को अच्छी तरह कर सकेंगे। इसमें कोई संशय की बात नहीं है। मगर काकाजी कहा करते थे कि संप, सुहृदभाव और एकता ही

एकांतिकभाव है। हमने कार्ड छपवाने के लिए जब गुरुजी से मॅसेज मंगवाया था, तो उन्होंने काकाजी का यही मॅसेज लिख कर भेजा था कि संप, सुहृदभाव और एकता ही एकांतिकभाव है और... हम सभी को एकांतिक बनना है। सिर्फ संसार के सुख में सुखी नहीं रहना है। प्रकृति पुरुष के अंदर जो कुछ भी है, गुणातीतानंदस्वामी ने तो लिखा है कि *यदि कोई भक्त प्रकृति पुरुष से संबंधित कुछ भी माँगें तो वह 'भक्त' नहीं और जो उसे दे दे वह 'गुणातीत' नहीं है।* इस बात पर हम विचार करें कि यदि कोई प्रकृति पुरुष से संबंधित सिर्फ सांसारिक सुख, ऐश्वर्य आदि गुरुजी से माँगें, तो वह 'भक्त' नहीं कहा जा सकता। दूसरी ओर यह चीज वे आपको खुद दें, तो वे 'गुणातीत' नहीं हैं। यह बहुत गूढ़ बात है। दरअसल तो बात यह है कि वे जो कुछ देते हैं, कब देते हैं? तो जिन्हें भगवान भजने हैं, उनकी साधना के मार्ग में कुछ अड़चन आती है, तब वे संकल्प करके कुछ भी देते हैं। लेकिन, जब उसका काम हो जाता है, तो वापिस भी ले लेते हैं, पर उसमें झूलते नहीं रहने देते। परंतु हमें तो जो कुछ भी मिलता है, उसी से हम खुश हो जाते हैं। जैसे छोटा बच्चा चॉकलेट मिलने पर खुश हो जाता है। वस्तुतः प्रकृति पुरुष से संबंधित जो वस्तुएँ हैं, वो भले हमें चाहिएँ, क्योंकि संसार में उनकी आवश्यकता भी है। पर, उनमें निमग्न नहीं होना चाहिए, उससे तो परे रहना चाहिए। ये मुकुंदजीवनस्वामी ऐसे पुरुष हैं, इसलिए वे देते तो हैं, पर उनमें रमने नहीं देते। यही गुणातीत पुरुष का असली लक्षण है। हम सबने बताया कि गुरुजी ने हमारा यह काम किया, हमारा वह काम किया। मगर इस काम से **हमारी प्रकृति का जो परिवर्तन हुआ और अखंड भगवान में रहने के लिए पात्रता दी, वह गुणातीत संत का लक्षण है। ऐसे ही गुणातीत संत के लक्षण गुरुजी में हैं।** तो, हम सब इनके जन्मदिन के अवसर पर गुरुजी से प्रार्थना करें कि वे हमारी प्रकृति का परिवर्तन करके भगवान के मनन चिंतन और स्मृति में अखंड रहने का वरदान हमें दें।

एक विशिष्ट बात और है – जैसे एक कुटुंब में चार भाई हैं और चारों भाइयों के अपने-अपने मकान और कुटुंब हैं। वे चारों कुटुंब पहले साथ-साथ रहते थे, लेकिन बाद में वे चारों कुटुंब अलग-अलग हो गए। तो क्या इसे प्रगति होना मान लिया जाए? लेकिन, वो चारों अलग होते हुए भी अगर फंक्शन आदि में इकट्ठे होकर एक-दूसरे को जानें, एक-दूसरे को साथ सहकार दें, तो आपसी पहचान बनी रह सकती है। तब ऐसा महसूस हो सकता है कि ये कुटुंब अलग होने के बावजूद भी इकट्ठे हैं। इसी प्रकार **'योगी परिवार' के रूप में हम सब इकट्ठे हुए हैं। हम सब अलग-अलग हैं। पर, हम 'गुणातीत समाज' के झंडे के नीचे एक होकर कार्य करें, तभी काकाजी और पप्पाजी का संकल्प साकार हो सकता है। तभी काकाजी व पप्पाजी का ऋण अदा करके हम आशीर्वाद ले सकते हैं और उनके अंतर की प्रसन्नता प्राप्त कर सकते हैं।**

गुरुजी ने यहाँ डेकोरेशन में काकाजी और पप्पाजी को गुणातीत समाज के दो पिलर्स (स्तंभ) के रूप में दर्शाया है। हम सब इकट्ठे होकर, साथ में मिलकर काकाजी और पप्पाजी का ऋण अदा करें, इसी भावना से गुरुजी अत्यधिक प्रयत्न, परिश्रम-मेहनत करके सब को एकत्रित करते हैं।

...जैसे 'मैत्री मिलन महोत्सव' में सूत्र लिखा था 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' – इस नारे को हम सब इकट्ठे होकर लगाएँ। **गुणातीत समाज का झंडा हम सब अलग-अलग नहीं, बल्कि इकट्ठे होकर ऊँचा उठाएँ** – ऐसी साक्षात दिव्य स्वरूपों – काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी से अंतर की प्रार्थना है...

प.पू. गुरुजी

...लांबा साहेब ने जो बात की, इसमें मैं इतना ही फर्क समझता हूँ कि इन्हें गुरुजी के 'चरित्र' कहे जाएं... पर सच में विचार में हूँ कि जोगी महाराज, काकाजी और पप्पाजी ने निर्दोषबुद्धि या दिव्यभाव की घड़ाई आप लोगों में इतनी कर दी कि आप सबने मेरे हर चरित्र को दिव्य माना है। लाईटटोन में, आपको हँसाने के लिए या अपनी हम्बलनेस ज़ाहिर करने के लिए यह नहीं कह रहा, बल्कि फॅक्ट है। यह सोच कर विचार आता है कि ओहो! बापा ने क्या काम किया है! काकाजी बोलते थे हमारा आध्यात्मिक समाज-दिव्य समाज स्थापित हो गया।

...सांकरदा में 'एकता' की बात चली थी, तब साहेब बोले थे – **बापा ने हमें एक-दूसरे से जिस प्रकार से जोड़ा है, उसी के कारण आज यह भावना प्रगट हुई है।** यह बात बिल्कुल सही है। यहाँ के यंगस्टर्स-सेवकों, बहनों को मैं डेढ़ महीने से देख रहा हूँ। आप भी सब जानते हैं कि हमारा समाज बढ़ गया, लेकिन सेवक मुट्ठीभर ही रहे हैं। वे सभी जानते हैं कि गुरुजी को सब एकदम अप-टू-डेट चाहिए। तनिक भी उन्नीस-बीस नहीं चलेगा। सो, खूब ध्यान से वे सब करते हैं।

मैं भी आप लोगों से जो हर बार कहता हूँ कि आप 'आओ' – वह एकदम सही बात है। मैं दो मतलब से कहता हूँ। एक तो – १९८६ में जब काकाजी ने शरीर छोड़ा, मैं बड़ा डर गया था। क्योंकि पहले तो काकाजी आते थे और सबका ध्यान रखते थे, सबकी परवरिश करते थे। शुरुआत में प्रेमस्वामी इत्यादि जब साथ में नई दिल्ली में आते थे, तब बहुत ठंड पड़ती थी- इतनी ठंड कि उस समय तो गाड़ियों के ऊपर भी बर्फ की परत जैसी जम जाती थी। दोपहर को बारह बजे फॉग लाईट लगा-लगा कर गाड़ियां चलानी पड़ती थीं और वह भी ऐसा नहीं कि एक दो दिन ही। अब तो इतनी ठंड भी नहीं पड़ती और ज़रा भी ऐसा कुछ हो, तो टी.वी. पर बहुत ज़्यादा बताते हैं कि कोहरे से दिल्ली बेहाल! उस समय तो ऐसा कुछ पता भी नहीं चलता था। हाँ, हमसे इतना कहा गया था कि वहाँ खूब ठंड पड़ती है, तो हम माईन्ड से प्रीपॅर्ड ही थे कि ठंड तो पड़ने ही वाली है। लेकिन, बहत्तर-तिहत्तर में काकाजी ने मुंबई में अखबार में पढ़ा होगा कि दिल्ली में बहुत ठंड पड़ रही है, तो सुबह-सुबह साधु समाज में उनका फोन आया कि अगर वहाँ बहुत ठंड पड़ रही हो, तो तुम लोग वापिस आ जाओ... तब मन में एहसास हुआ कि काकाजी हमारा कितना ख्याल रखते हैं। तो छियासी में जब काकाजी ने शरीर छोड़ दिया, तब मुझे लगा था कि अब मैं अकेला हो गया। पर, **छियासी से लेकर पिछले एक-दो साल छोड़ कर आख़िर तक मार्च में पप्पाजी रेग्युलर आ जाते थे।** वह काकाजी का संबंध देखकर ही आते थे। मुझे यह भी पता है कि आप भी कोई मेरा चेहरा देखकर नहीं आते, बल्कि काकाजी को राजी करने के लिए-मुकुंदस्वामी-गुरुजी के फंक्शन में जाना है, इसी सोच से आप सब आते हैं। यह कैसी अद्भुत भावना है! वर्ना कौन-किसके लिए इतना करता है? हरिधाम से सोलह संत जो आज आए हैं, वे ऐसे ही नहीं आए होंगे कि चलो दिल्ली देखने

जाना है। पर, स्वामिजी को हुआ कि मैं नहीं जा पा रहा हूँ, तो इन संतों को भेज दिया। वर्ना कोठारीस्वामिजी तो स्वामिजी के कहे बिना पानी भी न पिएं, तो दिल्ली तक बिना आज्ञा कैसे आएं? यूँ स्वामिजी ने भी अपना कितना प्रेम दर्शाया है। सो, पहले तो आप लोगों को खूब-खूब-खूब थैंक्स। क्योंकि, **आप सबके यूँ आते रहने से आपका मेरे साथ होने का मुझे एहसास रहता है।**

मैंने कई बार कहा ही है कि यहाँ के सेवक जिस तरह मेरी ओर निगाह रख कर जीते हैं, ऐसा मैं शायद काकाजी की ओर निगाह रख कर नहीं जिया हूँ। आप लोगों ने भले कुछ भी बातें की हों, हाँ इतना मैं पक्का मानता हूँ कि पूर्व का संबंध कह दो या काकाजी का पसंद किया हुआ पात्र होने के कारण, उन्होंने मेरे लिए सब सॅट करके दे दिया। जैसे स्नेहलस्वामी (सांकरदा) ने बात की 'गुरुजी ने काकाजी की आज्ञा पाली।' ये बातें भले आप सब करते हैं, पर मैं जानता हूँ कि मैंने कितनी आज्ञा उनकी पाली थी। हाँ, उन्होंने करामात ऐसी की कि मैं सीधा-सीधा उनकी आज्ञा में रहता रहूँ।

डॉक्टर संनदभाई तो बोलते थे कि *गुरुजी तो सर्दी के महंत!* तो काकाजी ने चालाकी क्या की– अगर गलती से मुझे पहले अप्रैल, मई या जून में यहाँ भेजते, तो मैं कभी दिल्ली नहीं आता। एक साल आता और फिर मना कर देता। लेकिन, यहाँ कितनी गरमी पड़ती है, उसकी मुझे छः साल तक भनक भी नहीं पड़ने दी। सर्दियों में भेजते रहे और फिर जब एक समाज डॅवलप हो गया और मैं उसमें घिर गया, तब फिर गर्मियों में भी भेजने लगे। फिर तो वापिस जा भी नहीं सकते थे। तो देखो ये चालाकी (करामात) किसने की? सो, आज्ञा पाली तो नहीं कहना चाहिए। पर एक बात बिल्कुल सही है – जिसे **पप्पाजी** अलग ढंग से कहते कि **हमारे ही प्रारब्ध और प्रकृति का उपयोग करके हमारे चैतन्य का विकास और शुद्धिकरण करे – वह गुणातीत!** हमें उनकी ऐसी बातें भले कुछ समझ में आएं या नहीं आएं, पर उनका विश्वास करें। इसलिए एक वचनामृत में लिखा है कि **बड़े संत जो बात करते हैं, वह वैसी ही है, यह जो माने वह सुखी हो जाए।** इसलिए सबसे पहले यह पक्का करें कि उनकी बातों का हमें भरोसा रखना है। 'ये सब सिर्फ महिमा की बातें हैं'– ऐसा न समझें। इस मामले में– मुझे शुरू से ऐसा विश्वास है कि **जोगी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी कुछ बात करते हैं, वे ही सच रहने वाली हैं; हमारी सोच उनके सामने टिक नहीं पाएगी।** इसीलिए स्वामिजी से तो दो-चार बार मैंने कहा भी है कि 'मेरा नॅचर ऐसा है कि नहीं करना, तो नहीं करना। पर, स्वामी एक बात पक्की है– मेरे मन में कुछ भी होगा या मेरे बारे में आपको कुछ भी सुनाई पड़े कि यह ऐसा कर रहा है – लेकिन, मैं करूँगा वही जो आप कहेंगे।'

तो हम यह बात खूब पकड़ कर रखें। पार्क की बात भी सबने की; पार्क जरूर अच्छा बन गया है। **इस इलाके के अंदर सब लोगों के लिए हमारा यह पार्क 'पेरेडाईज़ ऑन धी अर्थ' बन जाएगा।** यहाँ ही

'अशोका पार्क' भी है, जो इससे दस गुना बड़ा है। लेकिन वहाँ इतने लोग टहलने नहीं जाते और यहाँ आकर सब रिलेक्स हो जाते हैं। कई तो खुद ही बोलते हैं कि यहाँ पोज़िटिव वाइब्रेशन्स हैं। शक्ति नगर में रहते अभय जैन, जो कि चुस्त जैन हैं, यहाँ आते हैं और उन्हें पोज़िटिव वाईब्रेशन्स महसूस होती हैं। मैं भी चैलेन्ज से कहता हूँ कि **आप यहाँ वॉकिंग करोगे, तो दूसरी जगह पर तुम्हारा जो वॅट रिड्यूज़ नहीं होता होगा, वह इस पार्क में हो जाएगा।** आप सबने महिमा समझ कर खाली ताली बजाई, जिसे काकाजी कहते थे – 'भाटईवेड़ा' (नौटंकी की) किया। पर, सोचा कि क्यों? यहाँ सेवकों को मैंने कई बार कहा है कि **पप्पाजी मेरे साठवें बर्थ डॅ पर यहाँ-इस जगह पर बैठ कर गए, इसलिए ऐसा है।** पर, **यह बात सच में ऐसी ही है, यह जब मानेंगे, तब हमें इन बातों का रिज़ल्ट मिलेगा।** मुझे ऐसी चीजों का भरोसा बन जाता है। तो मेरा यह कहना है कि हम ऐसे प्रसंगों-बातों की जुगाली नहीं करते, याद नहीं रखते; इसीलिए हमारे साथ ऐसी घटनाएं बनती हैं, तब हम गलती खा जाते हैं।

बहुत सालों पहले की बात है, जब बापा के समय में गोंडल में उत्सव होते थे। यह समझने की बात करता हूँ कि हमारे यहाँ रसोई की सेवा में राजूभाई और विनोदभाई दो मेईन हैं। अगर राजू मुझे आकर पूछे कि गुरुजी फंक्शन में क्या बनाएं; उसे मैं कहूँ कि लड्डू बनाना और फिर विनोदभाई आकर पूछे कि गुरुजी ये फंक्शन में क्या बनाना है, उसे मैं कहूँ कि बूंदी बना लेना। तो फिर स्वाभाविक ही है न दोनों में टसल हो जाएगी। एक, दूसरे से कहेगा कि तू समझता नहीं, गुरुजी ने लड्डू बनाने के लिए कहा है; दूसरा, पहले से कहेगा कि नहीं, बूंदी बनाने के लिए कहा है। बापा गोंडल में अकसर ऐसा करते थे। पर, तब पप्पाजी और काकाजी जैसे सबको समझाते थे कि ऐसा करके बापा यह देखते हैं कि आप दोनों सुहृद्भाव से कितना काम करते हैं? **ऐसे प्रसंग हम सुनते भी हैं, लेकिन हमारे साथ जब ऐसा होता है, तब हम भूल जाते हैं।** अच्छा हुआ कि आज शाम को शिविर जैसी घरेलू सभा हुई तो ऐसे प्रसंग समझेंगे। वर्ना, कल तो आनंद करेंगे, केक काटेंगे; तुम अच्छे, हम अच्छे – ऐसा सब चलता रहेगा। तो, ऐसे प्रसंग हम समझें, साधु के साथ संबंध दृढ़ करें और बुद्धि से परे का विश्वास करें... **दिमाग़ होने के बावजूद भी तर्क नहीं करें, वो निर्दोषबुद्धि वाले कहा जाए।** अपने **जसुभाई भट्ट दादा** – अनिल स्टार्च में इंजीनियर-जनरल मेनेजर ऑफ केमिकल डिपार्टमेन्ट, बहुत अक्ल वाला व्यक्ति। पर, जब उनके घर गुणातीत ज्योत की ब्रांच खुली, तब **पप्पाजी ने जसुभाई भट्ट साहब को आज्ञा दी थी कि पू. हंसा दीदी की आज्ञा के मुताबिक सेवा करते रहना।** एक बार दीदी को वडोदरा जाना था। जसुभाई अनिल स्टार्च में से शाम को साढ़े सात-आठ बजे घर आए और गाड़ी अंदर पार्क ही की थी कि दीदी ने कहा कि भट्ट साहब, बस डिपो पर जाकर आप ज़रा पता कर आओ कि वडोदरा जाने वाली एक्सप्रेस बसीस सुबह कितने बजे जाती हैं, तो उसके मुताबिक मैं अपना

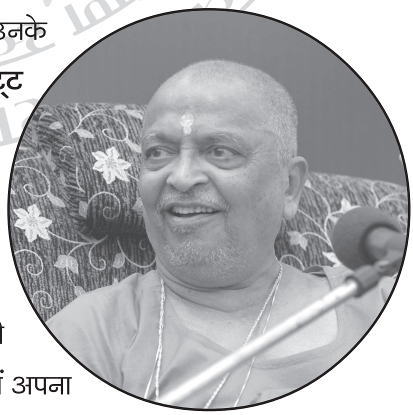

कार्यक्रम बना लूँगी। वे थके हुए आए होंगे, सो उन्हें एक बार विचार आया भी होगा कि वहां जाऊँ, उसके बजाय फोन पर पूछ लूँगा, तो वो टाईमिंग्स बता देंगे। लेकिन उनके मन में विचार आया कि नहीं, पप्पाजी ने कहा हुआ है कि दीदी की आज्ञा के मुताबिक सेवा करना। दीदी ने कहा है कि वहाँ जाकर पता करो। यहाँ हो सकता है कि दीदी ने जानबूझ कर चरित्र किया हो, और यह भी हो सकता है कि ओवर साईट से ऐसा कह दिया हो। लेकिन उसके फलस्वरूप पप्पाजी भट्ट साहब को जब मिले, तो गले लगा कर मिले और खुश होकर आशीर्वाद दिया। गाँव का गंवार ऐसा करता तो ठीक था, पर भट्ट साहब जैसे तो जानते थे कि फोन से काम हो सकता था। ऐसे प्रसंग हम सुनते हैं, लेकिन **क्या आज हम अपने गुरु के साथ ऐसे बिहेव करेंगे?** हम यहाँ गलती खा ही जाते हैं। मानो, यदि ऐसी दुविधा आ भी जाए कि एस.टी. डिपो पर कहाँ पूछने जाना, यहाँ से फोन पर ही हो जाएगा। पचास रुपए का पेट्रोल फूंकना, उसके बदले दो रूपए की कॉल के अंदर संस्था की बचत हो जाएगी। इतने समय की बचत में दूसरी सेवा भी कर पाएंगे। तो, इसका **तरीका यह है कि डायरेक्ट बुद्धि ने जो कहा, उसे पकड़ने के बजाय पलभर के लिए जिसे मानते हों–काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी–उन्हें याद करके काम करोगे, तो यह टेक्नोलॉजी इमीजिएट वर्क करेगी।** तुरंत ही कुछ चेईन्ज आ जाएगा। यदि जाना जरूरी होगा, तो भेज भी देंगे। पर, **तब वह 'स्वभाव' प्रेरित नहीं रहेगा, वह 'स्वरूप' प्रेरित बन जाएगा। वहाँ फिर हम कोई गलती भी नहीं खाएंगे।** जैसा कि काकाजी बोलते थे–धेन वी विल कमिट नो मिस्टेक। **ऐसी बातें और प्रसंग जिन्हें हम सभाओं में सुनकर जाते हैं, उन्हें अपने जीवन में भी आजमाएं। आजमाते रहेंगे, तो धीरे-धीरे इसका एहसास होता रहेगा।**

कल के लिए बनाया गया यह जो स्टेज हम देख रहे हैं, उसे देखने के लिए कल से मैं कम से कम चार-पांच बार चक्कर मार गया। मैं भी ताज्जुब में हूँ कि यह तिरछा क्यों बनाया गया है। व्हॉट इज़ धीस? धीस इज़ आई चिटिंग? दरअसल यह स्ट्रेट है। आशीष ने मुझे कई बार यह कहा। पर, आख़िर कल हमने इसकी डेप्थ नपवाई, तो इंच टू इंच ठीक निकला। आज आपको भी लग रहा होगा कि यह तिरछा है, पर तिरछा नहीं है। तो देखो आशिष् ने कैसा ब्रेईन लगाकर काम किया है? मुझे आशिष से कुछ करवाना हो, तो मैं उसे एक कन्सेप्ट दे देता हूँ। फिर उसकी सॅटिंग करने की सरदर्दी उसकी रहती है। मंदिर में प्रवेश करते ही आपने महाराज की एक मूर्ति देखी होगी, जिसमें पाघ के अंदर सभी स्वरूपों की मूर्तियाँ हैं। मैंने आशिष को इतना ही कहा था महाराज की मूर्ति का ऐसा कार्ड बनाना है, जिसमें सभी स्वरूपों की मूर्तियाँ आ जाएँ। वह बोला भी कि यह कैसे होगा। तो, मैंने उसे कह दिया था कि–कम्प्यूटर सब कुछ कर सकता है, मैं कुछ नहीं जानता; तू कर दे। पर, देखो! उसने यह जो मूर्ति बनाई–मुझे ठीक से याद है कि स्वामिजी जब आए थे और दंडवत् करते-करते उस मूर्ति को देखा, तो मुझसे इशारे में कहा–*आइडिया है!* सच, उसका माइंड बहुत क्रिएटिव है। अबकी बार मैंने

कहा था कि मार्च के कार्ड के डिज़ाईन में एक ब्रिज के पिलर्स में काकाजी और पप्पाजी को गुणातीत समाज के स्तंभ के रूप में रिफ्लेक्ट करना। उसने वह बनाया भी, लेकिन एक गलती कर दी कि 'लंडन ब्रिज' जो कि बहुत फेमस है, उसका पिक्चर लेकर डिज़ाईन बनाया। सो, हर एक का ध्यान काकाजी, पप्पाजी की मूर्ति पर न जाकर, लंडन ब्रिज पर ही चला गया। सबने कहा–कार्ड में अबकी बार लंडन ब्रिज दे दिया है। मेरा मक़सद यह फोकस करने का था कि **आज जो गुणातीत समाज का अस्तित्व दिखाई देता है, उसके स्तंभ काकाजी-पप्पाजी हैं।**

सो, मैंने आशिष को कहा कि कार्ड तो सब को समझ नहीं आया, लेकिन यह कंन्सेप्ट स्टेज पर ठीक से बनाना। आज देखते हैं कि उसने ऐसी सॅटिंग की कि उसके पीछे का रहस्य उभर आया।

आशिष की एक भावना मुझे खूब छू गई है। पहले मंदिर में सेवा करना आदि ऐसा उसका पक्का नहीं था। मतलब डिटरमिन्ड नहीं था। पर, एक दिन मुझसे कहा–गुरुजी, बाहर की जॉब करूँ, उसकी बजाय मंदिर में सेवा के लिए न रह जाऊँ? मुझे ऐसा था कि एक सेवक को मंदिर के लिए लें, तो फिर उसकी पूरी फॅमिली की जिम्मेदारी भी लेनी पड़ेगी और ऐसा कहाँ तक हमें खींचना? तो मैंने कहा–नहीं, ऐसे ही छुट्टी आदि करके तुम सेवा किया करना। तब वो एकदम भावना से बोला–

*गुरुजी! **काकाजी ने मुझे ब्रेईन दिया है–मेरे अंदर एक क्रिएटिवनेस है; आप हो, तब तक यह काम में आ जाए।*** **तो देखो, उसकी ऐसी भावना है!**

...आप सबको भी मैंने जो बुलाया है, वैसे ही नहीं बुलाया है। जो पुराने हैं उन्हें याद होगा कि बापा ने एक सुबह मंगल प्रवचन में कहा था–

आज तो मैंने सपने में शास्त्रीजी महाराज और महाराज के दर्शन किए और उनके साथ आप सब भी खूब तेजस्वी चैतन्यस्वरूप दिखाई दिए।

सो, मुझे यह बिल्कुल विश्वास है कि **आप सब जो आए हैं, वे सब चैतन्य स्वरूप मुक्त हैं। भले ही मुझे दिखाई नहीं पड़ते, पर मैं मानता जरूर हूँ।** हाँ, **ऐसा सब मानने की सूझ काकाजी के अंतर्धान होने के बाद ही मुझे आई।** उससे पहले तो, 'मैं तुमसे कुछ ज्यादा हूँ'–यही मानता था। तो मेरा कहना यह है कि **आप इतने समर्थ सब आए हो, तो हम सबके लिए ऐसा संकल्प करना और आशीर्वाद दे जाना कि कोई प्रारब्ध, कोई ग्रह–वैसे ग्रह तो हमारे लिए होते ही नहीं, लेकिन कहीं भी जो कुछ आड़े आता हो, प्रकृति टलती नहीं हो, अक्षरधाम का सुख प्राप्त करने में जो रुकावट करती हो, वे आपके आशीर्वाद से टल जाए।**

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

शेष अगले अंक में...

'चातुर्मास के नियम'

(21 जुलाई, बुधवार से 17 नवंबर, बुधवार तक)

[भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी प.पू. गुरुजी की आज्ञा के मुताबिक हर वर्ष दिए गए चातुर्मास के नियमों का पालन करते हुए, निम्न विशेष नियम रखें।]

आप जहाँ रहते हो या सत्संग करने जाते हो, उस मंदिर, केन्द्र एवं सत्संग समाज के मुक्तों में से **दो-दो मुक्तों के एक-एक गुण दर्शाते प्रेरणादायी प्रसंग** जो आपको खूब स्पर्श कर गए हों, वे हर सप्ताह लिखें और बहनें 'अक्षरज्योति' व पुरुष 'अशोकविहार मंदिर' दे जाएं या भेज दें।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	**21.7.2010**,	बुधवार	—	**देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**
(2)	दि.	**25.7.'10**,	रविवार	—	**गुरुपूर्णिमा – व्यासपूर्णिमा**
					(ताड़देव मंदिर के नवनिर्मित हॉल का उद्घाटन एवं महापूजा सुबह 9:00 से 11:30 करेंगे और... शाम को 6:30 से 9:00 गुरुपूर्णिमा की सभा का लाभ लेंगे।)
(3)	दि.	6.8.'10,	शुक्रवार	—	एकादशी – व्रत
(4)	दि.	10.8.'10,	मंगलवार	—	श्रावण मास – प्रारंभ
(5)	दि.	15.8.'10,	रविवार	—	भारत का स्वातंत्र्य दिन
(6)	दि.	20.8.'10,	शुक्रवार	—	पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।)*
(7)	**दि.**	**24.8.'10**,	**मंगलवार**	—	**श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन**
					(सुबह 8:00 से 10:00 प.पू. गुरुजी से शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने पूजा-प्रार्थना करेंगे।)
(8)	दि.	30.8.'10,	सोमवार	—	नाग पंचमी
(9)	दि.	31.8.'10,	मंगलवार	—	रांधण छठ (षष्ठी)
(10)	दि.	1.9.'10,	बुधवार	—	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज का प्रागट्य दिन,** शीतला सातम (सप्तमी)
(11)	दि.	2.9.'10,	गुरुवार	—	**जन्माष्टमी** – व्रत
(12)	दि.	5.9.'10,	रविवार	—	एकादशी – व्रत
(13)	दि.	8.9.'10,	बुधवार	—	श्रावण मास – समाप्त
(14)	दि.	11.9.'10,	शनिवार	—	गणेश चतुर्थी
(15)	दि.	19.9.'10,	रविवार	—	जलझीलनी एकादशी – व्रत
(16)	दि.	22.9.'10,	बुधवार	—	अनंत चतुर्दशी – गणपति विसर्जन

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052